हमारी संस्कृति – हमारी धरोहर

बीकानेर, अक्टूबर 2019

लोक सौरभ

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

कंचन कलस बिचित्र सँवारे।
सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे॥

लोक सौरभ

की ओर से

सभी पाठकों को

दीपोत्सव

की

शुभकामनाएं

अनुक्रमणिका

हर मन में जगाएं सांस्कृतिक चेतना...

अपनी बात
परम्परा किसी घटना की वर्षगांठ मात्र नहीं 04

लोक सौरभ

अध्यक्ष
डॉ. बिट्ठल दास मूंधड़ा
भारतीय विद्या मंदिर

सम्पादक
श्री राजीव हर्ष

लोक उत्सव
दीपावली 08

शास्त्र कहते हैं...

उत्साहसम्पन्नदीर्घसूत्रं क्रिया
विधिज्ञं शूरकृतज्ञं
व्यसनेष्वसक्तम दृढ़सौहृदं च
लक्ष्मी स्वयं मार्गति वासहेतो

उत्साह से भरे, कार्य में विलम्ब नहीं करने वाले, निर्व्यसनी साहसी और कृतज्ञ लोगों को मां लक्ष्मी स्वयं ढूंढ़ कर उनके यहां निवास करती हैं।

लोक उत्सव
सूर्य उपासना का महापर्व 38

हमारे मास
उजास का मास 20

लोक परम्परा
सुहाग का पर्व 27

लोक आस्था
पुण्य स्नान का पर्व 28

लोक परम्परा
संस्कृति में महत्व बिटिया का 30

लोक आराध्य
गजवाहिनी एवं उलूकवाहिनी 32

लोक प्रवर्तक
सिक्ख पंथ प्रवर्तक 42

सभी फाइल फोटो

प्रकाशकीय एवं सम्पादकीय कार्यालय
भारतीय विद्या मंदिर, रतन बिहाजी जी का मंदिर, बीकानेर

Email

rajivharsh@gmail.com

Website

राजीव हर्ष

परम्परा किसी घटना की वर्षगांठ मात्र नहीं

परम्परा ज्ञान और संस्कृति की संवाहक होती है। कोई विचार, कोई दर्शन या चिंतन परम्परा की बुनियाद होता है। परम्परा बाह्य उपायों से मनुष्य के अंतस को बदलने का प्रयास है।

परम्परा किसी घटना की वर्षगांठ मात्र नहीं होती। परम्परा ज्ञान और संस्कृति की संवाहक होती है। कोई विचार, कोई दर्शन या चिंतन परम्परा की बुनियाद होता है। परम्परा बाह्य उपायों से मनुष्य के अंतस को बदलने का प्रयास है। एक परम्परा को आकार लेने में बहुत समय लगता है। पीढ़ियों का अनुभव उसका परिमार्जन और परिष्कार करता है।

परंपराएं हमारी सांस्कृतिक विरासत है। परम्परा किसी एक परिवार, एक समूह, एक समुदाय या फिर व्यापक समाज से संबंद्ध हो सकती है। परंपराएं हमें हमारे सांस्कृतिक गौरव का बोध कराती है। हमें हमारे अतीत से जोड़ती है। समाज में सांस्कृतिक विविधता परंपराओं के कारण ही आती है।

परंपरा का आधुनिकता से कोई विरोध नहीं है। आधुनिकता का मतलब अपनी परम्पराओं का विरोध करना नहीं है, देशकाल परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन में परम्पराओं में जरूरी बदलाव लाना ही आधुनिकता है। तर्कसंगत होना, विज्ञान सम्मत होना ही सही मायनों में आधुनिकता है। ऐसी आधुनिकता परंपराओं को तोड़ती नहीं, उनका मार्जन करती है। परंपरा को तर्कसंगत और व्यावहारिक बनाती है। आधुनिकता ही परंपरा को रूढ़ी बनने से रोकती है।

भारतीय संस्कृति कभी भी रूढ़िवादी संस्कृति नहीं रही। यह नदी की तरह अजस्र प्रवाहमयी रही है। हमारे ऋषि–मुनियों, दार्शनिकों तथा चिंतकों ने कभी भी इसमें ठहराव नहीं आने दिया। समय–समय पर नए चिंतन और दर्शन से हमारी परंपराओं को समृद्ध किया और उन्हें रूढ़ी बनने से रोका। हमारी संस्कृति ने परंपरा के साथ आधुनिकता का सदैव सम्मान किया है। हर संस्कृति और नए दर्शन का स्वागत किया, उसे समझने का प्रयास किया, उनमें जो भी ग्रहण करने योग्य था, उसे आत्मसात कर अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाया। हमारी सनातन संस्कृति में ऐसे कई लोग हुए जिन्होंने सदियों पुरानी मान्यताओं, धारणाओं और परंपराओं का विरोध किया, हमने उनका भी सम्मान किया, उन्हें ऋषि माना माना और उनके विचारों को भी सहेज कर रखा है।

परंपराओं में समय अनुकूल बदलाव लाना जरूरी है। इससे परंपरा की हानि नहीं होती वरन वह और समृद्ध हो जाती हो जाती है, लेकिन जरूरी यह है कि परंपरा की बुनियाद के साथ छेड़छाड़ न की जाए।

हमने बाहर से आए चिंतकों को भी पूरा सम्मान दिया। उनके चिंतन और दर्शन को भी समझा उनमें जो कुछ ग्राह्य था उसे आत्मसात कर अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाया। हमारी इसी प्रवृत्ति ने हमारी संस्कृति को समृद्ध और विविधता पूर्ण बनाया।

परंपराओं में समय अनुकूल बदलाव लाना जरूरी है। इससे परंपरा की हानि नहीं होती वरन वह और समृद्ध हो जाती हो जाती है, लेकिन जरूरी यह है कि परंपरा की बुनियाद के साथ छेड़छाड़ न की जाए। बुनियादी मूल्यों के साथ छेड़छाड़ करना कहीं से भी आधुनिकता नहीं है।

दीपावली हमारी सदियों पुरानी परंपरा है। दीपावली से पहले घरों का रंग रोगन करना, साफ सफाई करना, घरों को सजाना, दीपक जलाना, आतिशबाजी करना, नए कपड़े पहनना, पकवान बनाना आदि इस परंपरा के बाह्य स्वरूप हैं। अंधकार पर रोशनी की, अज्ञान पर ज्ञान की जीत इसका मूल संदेश है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श उनके जीवन चरित्र को याद करना, महावीर के सिद्धांतों को याद करना मां लक्ष्मी का आह्वान कर उनसे समस्त चराचर जगत के कल्याण की प्रार्थना करना दीपावली का मूल उद्देश्य है

दीपावली केवल धन की देवी की उपासना करने और खुशियां मनाने का त्यौहार नहीं है यह हमारे भीतर समस्त जगत के कल्याण के भाव को जागृत करने वाला, अध्यात्म से जोड़ने वाला त्यौहार है। इसके बाह्य स्वरूप में भले बदलाव आ जाए, लेकिन मूल भाव सदैव अक्षुण्ण रहना चाहिए।

दीपावली हमारी सदियों पुरानी परंपरा है। दीपावली से पहले घरों का रंग रोगन करना, साफ सफाई करना, घरों को सजाना, दीपक जलाना, आतिशबाजी करना, नए कपड़े पहनना, पकवान बनाना आदि इस परंपरा के बाह्य स्वरूप हैं।

नीता हर्ष
(लेखिका)
राजस्थान

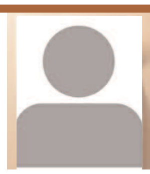

उम्मीदों और उमंगों का त्यौहार

दीपावली

दीपावली आशाएं और उमंगें जगाने पर्व है। आदिकाल से मनाया जाने वाला यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की, अज्ञान पर ज्ञान की और अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है। हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा यह पर्व हमें हमारे सांस्कृतिक इतिहास और हमारी समृद्ध परंपराओं की याद दिलाता है। इस दिन भगवान श्री राम 14 वर्ष का वनवास पूरा कर कर अयोध्या लौटे थे। इसी दिन सागर मंथन के दौरान मां लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ। भगवान महावीर का और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती का निर्वाण इसी दिन हुआ। राजा विक्रमादित्य का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ। पांडव 13 साल का अज्ञातवास पूर्ण कर इसी दिन अपने राज्य में लौटे थे। इसी दिन भगवान विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक का स्वामी बनाया और इंद्र ने स्वयं को सुरक्षित जान दीप जलाए और खुशियां मनाई। सिक्खों के लिए भी दीपावली महत्वपूर्ण है क्योंकि अमृतसर में सन 1577 ईस्वी में इसी दिन स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास हुआ और सन 1619 ईस्वी में दीपावली के दिन ही सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था। पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दोनों दीपावली के दिन ही हुआ।

दीपावली के नजदीक आते ही पूरे देश में उत्साह का माहौल बन जाता है। हर आयु और हर वर्ग के लोगों में खुशियों का संचार करने वाला यह पर्व मेहनतकशों को रोजगार मिलने की और व्यापारियों को व्यवसाय में वृद्धि की आस दिलाता है। झोपड़ी से लेकर अट्टालिकाओं तक में मां लक्ष्मी के स्वागत की तैयारियां होने लगती हैं। घरों में रंग रोगन और साफ सफाई का काम शुरू हो जाता है। बाजार रंग बिरंगी रोशनियों से सज जाते हैं।

दीपावली के अवसर पर खरीदारी करना शुभ माना जाता है। इस धारणा के चलते लोग दीपावली के अवसर पर सोना, गहने और घरेलू जरूरतों का सामान खरीदते हैं। यही वजह है कि हमारे देश में दीपावली सोने की बिक्री का सबसे बड़ा अवसर बन गया है।

दीपावली केवल भारत में ही नहीं दुनिया के हर उस देश में मनाई जाती है जहां भारतवंशी और प्रवासी भारतीय रहते हैं। श्रीलंका, पाकिस्तान, म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, फिजी, मॉरीशस, केन्या, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो, नीदरलैंड, कनाडा, ब्रिटेन संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों में दीपावली धूम धाम से मनाई जाती है। दीपावली के अवसर पर होने वाले कार्यक्रमों में भारतीयों के अलावा अन्य स्थानीय लोग भी हिस्सा लेते हैं। कई देशों में तो दीपावली के अवसर पर सार्वजनिक अवकाश रहता है।

मलेशिया में दीपावली

मलेशिया में दीपावली मनाने का अंदाज ठीक भारत जैसा है। लोग घरों की साफ–सफाई करते हैं, उन्हें सजाते हैं। मिट्टी के दीपक जलाए जाते हैं और आतिशबाजी कर दीपोत्सव की खुशियां मनाई जाती है। दीपावली के अवसर पर मलेशियाई हिन्दू अलग–अलग जातियों और धर्मों के लोगों को अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं। दीपावली के अवसर पर मलेशिया में सार्वजनिक अवकाश रहता है। वहां यह त्योहार धार्मिक सद्भावना और अलग–अलग धार्मिक और जातीय समूहों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को मजबूत बनाने का महत्वपूर्ण अवसर बन गया है।

ब्रिटेन में दीपावली

ब्रिटेन में भारतीय अपने घरों की साफ सफाई कर दीपक और मोमबत्तियां जलाते हैं। मिठाइयां बांटते हैं। ब्रिटेन के खूबसूरत शहर लेस्टर में दीपावली का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यहां रहने वाले हिंदू, जैन और सिक्ख समुदाय के लोगों के साथ ही दूसरे धर्म के लोग भी इस पर्व का भरपूर आनंद उठाते हैं। लोग पार्कों में और सड़कों में समूह के रूप में एकत्र हो कर पटाखे चलाते हैं। वर्ष 2009 से ब्रिटिश प्रधानमंत्री के निवास स्थान, 10 डाउनिंग स्ट्रीट पर दीपावली का उत्सव मनाया जाता है। प्रिंस चार्ल्स जैसी हस्तियां ब्रिटेन के नेस्डेगन स्थित स्वामीनारायण मंदिर जैसे प्रमुख हिंदू मंदिरों में दीवाली समारोह में भाग लेती हैं। वर्ष 2013 में प्रधानमंत्री डेविड कैमरून और उनकी पत्नी ने इस मंदिर में आयोजित दीपावली और अन्नकूट उत्सव में हिस्सा लिया था।

नेपाल में दीपावली

नेपाल में दीपावली का पर्व पांच दिवसीय उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे 'तिहार' या 'स्वन्ति' के नाम से जाना जाता है। पांच दिवसीय उत्सव का पहला दिन काक दिवस, दूसरा दिन श्वान दिवस के रूप में मनाया जाता है। काक दिवस पर कौओं को भगवान का दूत समझ तरह –तरह के व्यंजन खिलाए जाते हैं। श्वान दिवस पर कुत्तों की ईमानदारी और वफादारी पर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनकी विधि–विधान से पूजा की जाती है, आरती की जाती है। तिहार का तीसरा दिन नेपाली संवत् का आखिरी दिन होता है। इस दिन घरों को दीयों से सजाया जाता है, मां लक्ष्मी की पूजा कर आतिशबाजी की जाती है। इस दिन व्यापारी अपने सारे खातों को साफ कर उन्हें खत्म कर देते हैं। चौथे दिन को नव वर्ष के रूप में मनाते हैं। इस दिन यम पूजा भी की जाती है। पांचवें दिन को भाई टीका कहते हैं। इस दिन बहनें अपने भाई को भोजन कराती हैं और भाई अपनी बहनों को उपहार देते हैं।

म्यांमार में दीपावली

म्यांमार में यह पर्व राष्ट्रीय उत्सव के रूप में मनाया जाता है। विष्णु–लक्ष्मी का पूजन होता है। लोग नए कपड़े पहन कर नाचते गाते हैं। रात्रि में दीपों की पक्तियां सजाकर रोशनी की जाती है और आतिशबाजी की जाती है।

मॉरिशस में दीपावली

मॉरीशस में दीपावली भारत की तरह ही मनाई जाती है। दीपावली पर सार्वजनिक अवकाश रहता है। यहां दीपावली का उत्सव पांच दिन चलता है। घरों बाजारों और उद्यानों को रंगबिरंगी रांशनी, रंगोली और मांडणों से सजाया जाता है। मार्गों को फूलों से सजाया जाता है। धन तेरस के दिन गहनों और बर्तनों की खरीद की जाती है। दीपावली के दिन घर–घर में लक्ष्मी पूजन होता है। खूब आतिशबाजी की जाती है। मेहमानों की आवभगत इत्र व सुगन्धित पुष्पों से की जाती है। उन्हें विभिन्न व्यंजन परोसे जाते हैं।

श्रीलंका में दीपावली

श्रीलंका में दीपावली पर सार्वजनिक अवकाश रहता है। तमिल समुदाय के लोग सुबह सुबह तेल से स्नान कर नए कपड़े पहनते हैं। पूजा के लिए मंदिर जाते हैं। शाम को पटाखे चलाते हैं। दीपक जलाकर धन की देवी लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है। खेल, आतिशबाजी, गायन और नृत्य, भोज आदि का अयोजन किया जाता है। चीनी मिट्टी व मिश्री से बने खिलौनों की विशेष दुकानें सजती हैं। रात में सफेद हाथियों को विशेष स्वर्णाभूषणों से सजाकर जुलूस निकाला जाता है।

गुयाना में दीपावली

गुयाना में रह रहे भारतवंशी दीपावली का पर्व सदियों से मनाते आ रहे हैं। दीपावली के दिन घरों में मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है। घरों की रंगाई पुताई की जाती है। गृहिणियां घरों में रंगोली बनाती हैं। सार्वजनिक इमारतों, दुकानों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों को खूब सजाया जाता है। रंग–बिरंगे गुब्बारे उड़ाते हैं। रात को आतिशबाजी का कार्यक्रम चलता है। दीपावली के अवसर पर गुयाना हिंदू डेमक्रेटिक सभा की ओर से देश भर में वाहन रैली निकाली जाती है। रैली में शामिल ट्रकों और कारों को रंगबिरंगी रोशनियों से सजाया जाता है। यह रैली पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण है। पुराने समय में जब मोटर कारें नहीं हुआ करती थीं उस समय इस रैली में घोड़ा गाड़ियों को शामिल किया जाता था।

सिंगापुर में दीपावली

दीपावली सिंगापुर का अति महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पर्व है। सिंगापुर के लिटिल इंडिया को दीपावली के अवसर पर रंग बिरंगी रोशनियों से सजाया जाता है। सिंगापुर में बसे हिंदुओं के लिए दीपावली वार्षिक उत्सव है। घरों की साफ सफाई कर उन्हें सजाया जाता है। रंगोली बनाई जाती है। महिलाएं मेहंदी लगाती है। दीपावली पर यहां सार्वजनिक अवकाश रहता है। इस उत्सव के दौरान कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

फिजी में दीपावली

फिजी में बड़ी तादाद में रहने वाले हिंदू दीपावली हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। दीपावली की तैयारियां कई सप्ताह पहले ही शुरू हो जाती है। लोग अपने घरों को रंगीन रोशनियों से सजाते हैं। घर के बाहर और आस–पास रंगोली बनाते हैं। तरह तरह के पकवान बनते हैं। आतिशबाजी का दौर दीपावली से दो दिन पहले शुरू होता है और दो दिन बाद तक जारी रहता है। कैरेबियाई देशों में त्रिनिदाद और टोबैगो में बड़ी संख्या में भारतीय बसे हैं और वहां खूब धूमधाम से दीपावली मनाई जाती है। लोग घरों में पूजा करते हैं और रोशनी से घर जगमगा उठते हैं।

अमेरिका में दीपावली

अमरीका के न्यूयार्क और सैनएंटोनियो जैसे कई शहरों में दीपावली के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों में हजारों की संख्या में लोग भाग लेते हैं। अमरीकी राष्ट्रपति भवन में भी दीपावली मनाई जाती है। व्हाइट हाउस में पहली बार दीपावली वर्ष 2003 में मनाई गई। 2007 में पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज वॉकर बुश ने इसे आधिकारिक दर्जा दिया। बराक ओबामा पहले ऐसे अमरीकी राष्ट्रापति थे जिन्होंने वर्ष 2009 में व्हाइट हाउस में आयोजित दीपावली उत्सव में व्यक्तिगत तौर पर भाग लिया। यह क्रम जारी है।

ऑस्ट्रेलिया में दीपावली

ऑस्ट्रेलिया में दीपावली का पर्व भारतीय मूल के लोगों और स्थानीय लोगों के बीच मेल मिलाप का पर्व बन गया है। मेलबॉर्न में दीपावली का उत्सव सार्वजनिक रूप से मनाया जाता है। सेलिब्रेट इंडिया इंकॉर्पोरेशन नामक संगठन ने वर्ष 2006 में मेलबोर्न में प्रतिष्ठित फेडरेशन स्क्वायर पर दीपावली समारोह के आयोजन की शुरुआत की थी। एक सप्ताह से अधिक समय तक चलने वाला यह समारोह मेलबॉर्न का एक मुख्य उत्सव माना जाता है। उत्सव के दौरान हजारों लोग फेडरेशन स्क्वायर पहुंच कर भारतीय व्यूंजन, संगीत, नृत्य, पारंपरिक कला, शिल्प और शानदार आतिशबाजी का आनंद उठाते हैं। फेडरेशन स्क्वायर पर आयोजित होने वाले इस उत्सव को ऑस्ट्रेलिया के सबसे बड़े उत्सव के रूप में पहचाना जाता है। दीपावली के अवसर पर विक्टोरियन संसद, मेलबोर्न संग्रहालय, फेडरेशन स्क्वायर, मेलबोर्न हवाई अड्डे और भारतीय वाणिज्य दूतावास को सजाया जाता है।

नीता हर्ष
(लेखिका)
राजस्थान

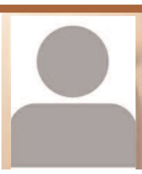

दुनियाभर में हैं रोशनी के पर्व

दीपावली अंधेरों को रोशन करने का और खुशियां मनाने का त्यौहार है। हम दीपक जला कर अंधेरे को दूर करते हैं, वहीं आतिशबाजी कर अपनी खुशियों का इजहार करते हैं। दुनिया में कई ऐसे देश हैं जहां दीपावली जैसे उत्सव मनाए जाते हैं।

थाइलैंड में लोय क्राथोंग

थाइलैंड में थाई कलैंडर के 12वें चंद्रमास की पूर्णिमा (आम तौर पर नवंबर में) के दिन लोय क्राथोंग उत्सव मनाया जाता है। लोय क्राथोंग उत्सव में लोग केले के पत्ते और तनों से बनी छोटी टोकरी में दीपक, फूल, धूप, अगरबत्ती, और सिक्के डाल कर नदी में प्रवाहित करते हैं। कुछ लोग इस टोकरी में अपने नाखून और बाल भी डालते हैं। मान्यता है कि ऐसा करने पर उन्हें अपने पापों और नकारात्मक विचारों से मुक्ति मिलती है। यह आत्मशुद्धि और जागृति का पर्व माना जाता है। वैसे तो यह पर्व पूरे थाईलैंड में मनाया जाता है, लेकिन चांगमाई, सुखेथाई और बैंकॉक में इस पर्व की छटा निराली होती है।

यी पेंग

यी पेंग उत्सव लोय क्राथोंग उत्सव से दो दिन पहले शुरू हो जाता है। इसे दुनिया भर में स्कोई लेंटर्न फेस्टिवल के नाम से जाना जाता है। इस दिन कागज से बने आकाश दीप आसमान में उड़ाए जाते हैं। यह उत्सव थाईलैंड के चियांग माई का सबसे बड़ा उत्सव है। मान्यता है वे आकाशीय दीपक के साथ अपने पुराने पाप और दुर्भाग्य को विदा करते हैं। यदि किसी का दीपक बिना बुझे रात के अंधेरे में गुम हो जाता है तो यह माना जाता है कि उसका अगला साल बहुत अच्छा रहेगा। इस उत्सव के दौरान तरह–तरह के दीपकों से घरों और मंदिरों को सजाया जाता है।

स्कॉटलैंड में अप हेली

हर साल जनवरी के आखिरी मंगलवार को लेर्विक में एक प्रकाशोत्सव आयोजित किया जाता है। इस त्यौहार को अप हेली आ कहते हैं। इस त्यौहार में लोग प्राचीन समुद्री योद्धाओं जैसी ड्रेस पहने हाथ में मशाल लेकर जुलूस निकालते हैं। महिलाओं और लड़कियों को इस जुलूस में शामिल नहीं किया जाता। इस दौरान पूरा शहर रोशनी से नहा जाता है।

कनाडा

कनाडा की आजादी के उपलक्ष में एक जुलाई को कनाडा दिवस मनाया जाता है। 1867 में इस दिन कनाडा अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ था। इस दिन पूरे देश में कई तरह के आयोजन होते हैं। दीपावली की तरह मनाए जाने वाले इस उत्सव में अनेक शहरों में जगह – जगह आतिशबाजी की जाती है। हजारों लोग इसे देखने पहुंचते हैं। बहुत से लोग अपने घरों पर आतिशबाजी कर आजादी का जश्न मनाते हैं।

इंग्लैंड

इंग्लैंड में 5 नवंबर की रात गॉय फॉक्सप नाइट और बोनफायर नाइट के रूप में मनाई जाती है। लोग जलते बैरल लेकर सड़क पर मार्च करते हैं और आतिशबाजी करते हैं। इस उत्सव में हर उम्र के लोग हिस्सा लेते हैं। अंत में शहर के बीचों–बीच एकत्रित होकर बोनफायर करते हैं। यह उत्सव सन् 1605 में लंदन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स को विस्फोट से उड़ा कर किंग जेम्सब की हत्या के षड्यंत्र के विफल होने की खुशी में मनाया जाता है। यह षड्यंत्र गॉय फॉक ने रचा था जिसे 5 नवंबर को गिरफ्तार कर लिया गया।

फ्रांस

फ्रांस में क्रान्ति दिवस पर दीपोत्सव मनाया जाता है। इस दिन लोग अपने घरों को सजाते हैं। रोशनी की जाती है। दीपावली की तरह आतिशबाजी की जाती है।

जापान में ओनियो फेस्टिवल

ओनियो फायर फेस्टिवल जापान का सबसे प्राचीन उत्सव है। यह हर साल जनवरी में शुरू होता है। इस दिन फुकुओका में दीपावली जैसी रोशनी की जाती है। मशालें भी जलाई जाती हैं। मशालों को लेकर चलने वाले लोग तरह–तरह के करतब भी दिखाते हैं।

चीन

चीन में यह पर्व मनाने के लिए कई दिन पूर्व घरों की सफाई शुरू कर दी जाती है। मकानों के बाहर लाल कागज से बनी मानव आकृतियां चिपकाई या लटकाई जाती हैं। घरों में रंगीन कागजों से सजावट की जाती है। मान्यता है कि इस तरह से सजावट करने पर वर्ष भर अनिष्ट की आशंका नहीं रहती।

राही
(लेखक)
राजस्थान

उजास का मास कार्तिक

विक्रम संवत का आठवां महीना कार्तिक स्नान, दान, पूजा पाठ, व्रत और त्यौहार का महीना है। इस महीने की शुरुआत शरद पूर्णिमा से होती है और समापन कार्तिक पूर्णिमा को होता है। स्कन्द पुराण, नारद पुराण तथा पद्म पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों में कार्तिक मास को पुरुषार्थ चतुष्टैय अर्थात धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की पूर्ति करने वाला मास कहा गया है। इसे दामोदर मास भी कहा जाता है। कार्तिक मास को मोक्ष का द्वार कहा जाता।

मान्यता है कि कार्तिक मास में ईश्वर की अराधना कर वांछित फल प्राप्त किये जा सकते हैं। कार्तिक महीने में उत्तम स्वास्थ्य के लिए भगवान धन्वंतरि की, पूर्ण आयु के लिए यम की और सम्पन्नता के लिए मां लक्ष्मी की अराधना की जाती है। कहते हैं कि इस मास में दीपदान, तुलसी पूजा, भूमिशयन, ब्रह्मचर्य का पालन करने तथा भोजन दाल, लहसुन, प्याज और मांसाहर का निषेध करने से मनुष्य विकास के पथ पर आगे बढ़ता है, मानसिक विकार दूर होते हैं और स्वास्थ्य उत्तम रहता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार कार्तिक मास 14 अक्टूबर 2019 को आरम्भ होगा।

कार्तिक स्नान

इस महीने श्रद्धालु सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में स्नान कर पूजा पाठ करने का व्रत लेते हैं। इसे कार्तिक स्नान कहा जाता है। यह महिलाओं के लिए विशेष फलदायी माना जाता है। इस मास में पवित्र नदियों में स्नान करने को पुण्य फलदायी माना जाता है। जलाशय, कुएं, बावड़ी, पोखर, झरने व नदी में स्नान क्रमशः अधिक पुण्यवान होता जाता है। मान्यता है कि दो अथवा तीन नदियों के संगम में स्नान करने से अधिक पुण्य मिलता है। तारों की छाया में किया गया स्नान उत्तम तथा सूर्योदय के समय किया गया स्नान मध्यम श्रेणी का माना जाता है। दिन चढ़ने पर किया गया स्नान कार्तिक स्नान नहीं माना जाता।

तुलसी पूजा

कार्तिक मास में तुलसी की पूजा की जाती है। माना जाता है कि भगवान विष्णु तुलसी के हृदय में शालिग्राम के रूप में निवास करते हैं। देवउठनी एकादशी के दिन तुलसी का भगवान सालिगराम के साथ विवाह भी करवाया जाता है।

दान

कार्तिक महीने में दान की, विशेष रूप से दीपदान की बड़ी महत्ता है। श्रद्धालु जन मंदिरों एवं नदियों में दीपदान करते हैं और आकाश दीप जलाते हैं। इसके अलावा गो दान, तुलसी दान, आंवला दान, अन्न दान भी करते हैं।

व्रत एवं त्यौहार

इस मास में करवा चौथ, अक्षय नवमी, अहोई अष्टमी, दीपावली, गोवर्धन पूजा, यम द्वितीया (भैया दूज), देवोत्थापन एकादशी, गोपाष्टमी जैसे व्रत एवं त्यौहार आते हैं।

कार्तिक कृष्ण द्वितीया – 15 अक्टूबर

गुरु रामदास जयंती

गुरु रामदास सिक्खों के चौथे गुरु थे। पवित्र शहर रामसर, जो कि अब अमृतसर के नाम से जाना जाता है, का निर्माण उन्होंने ही किया। उनका जन्म चूना मण्डी, लाहौर (अब पाकिस्तान) में कार्तिक कृष्णा द्वितीया संवत् 1591 को बाबा हरी दास जी सोढ़ी खत्री के यहां हुआ। इनकी माता का नाम दया कौर जी (अनूप कौर जी) था।

16 अक्टूबर

विश्व खाद्य दिवस

वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन की स्थापना तिथि के सम्मान में प्रतिवर्ष 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस मनाया जाता है। यह दिवस सबके लिए पौष्टिक आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

कृष्ण तृतीया–चतुर्थी – 17 अक्टू

करवा चौथ

करवा चौथ महिलाओं का प्रमुख त्यौहार है। पूरे उत्तर भारत में विवाहित महिलाएं इस दिन पूरे उत्साह के साथ व्रत रखती हैं। वे पूरे दिन निराहार रह कर रात को चंद्र दर्शन के उपरांत भोजन ग्रहण करती हैं।

कार्तिक कृष्ण षष्ठी – 19 अक्टूबर

कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को भगवान शिव एवं पार्वती के पुत्र भगवान कार्तिकेय का पूजन किया जाता है। मान्यता है कि कार्तिकेय के पूजन से रोग, राग, दु:ख और दरिद्रता का निवारण होता है।

कार्तिक कृष्ण अष्टमी – 21 अक्टूबर

अहोई अष्टमी

कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष अष्टमी को अहोई अष्टमी कहा जाता है। इस दिन माताएं संतान की लंबी आयु के लिए अहोई माता की पूजा करती हैं और व्रत रखती हैं। तारों अथवा चंद्रमा के दर्शन और पूजन के बाद ही व्रत खोला जाता है। मान्यता है कि इस दिन व्रत रखने से अहोई माता बच्चों की सलामती और मंगलमय जीवन का आशीर्वाद देती हैं।

आजाद हिंद फौज स्थापना दिवस

रासबिहारी बोस ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सन् 1942 में भारत को अंग्रेजों के कब्जे से आजाद कराने के लिये जापान की सहायता से टोकियो में आजाद हिन्द फौज का गठन किया। बाद में नेताजी सुभाषचंद्र बोस को आजाद हिन्द फौज का सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त कर कमान उनके हाथों में सौंप दी। 21 अक्टूबर 1943 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड ने मान्यता दे दी।

कार्तिक कृष्ण एकादशी – 24 अक्टूबर

रमा एकादशी

कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी चातुर्मास की अंतिम एकादशी है। इसे रमा एकादशी कहते हैं। इस दिन मां लक्ष्मी के रमा स्वरूप के साथ भगवान विष्णु के पूर्णावतार केशव की पूजा की जाती है। मान्यता है कि रमा एकादशी का व्रत कामधेनु और चिंतामणि के समान फलदायी होता है। रमा एकादशी का व्रत रखने से मनुष्य के सभी पाप धुल जाते हैं।

24 अक्टूबर

संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस

द्वितीय विश्व युद्ध के विजेता देशों ने 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की थी। संयुक्त राष्ट्र अधिकार पत्र पर 50 देशों ने हस्ताक्षर किये। यह संगठन अंतरराष्ट्रीय कानूनों को सुविधाजनक बनाने, अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, मानव अधिकार और विश्व शांति के लिए कार्यरत है।

कार्तिक कृष्ण द्वादशी – 25 अक्टूबर

गोवत्स द्वादशी

कार्तिक, माघ, वैशाख और श्रावण महीनों की कृष्ण पक्ष की द्वादशी को गोवत्स द्वादशी का व्रत रखा जाता है। कार्तिक मास की गोवत्स द्वादशी को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस दिन सागरमंथन के दौरान कामधेनु का प्रादुर्भाव हुआ था। इस दिन गाय तथा उनके बछड़ों की सेवा की जाती है। इस व्रत में गाय के दूध से बने खाद्य पदार्थों का सेवन नहीं किया जाता है।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी – 25 अक्टूबर

धन्वंतरी जयंती

महान चिकित्सक धन्वंतरी भगवान विष्णु के अवतार समझे जाते हैं। मान्यता है कि समुद्र मंथन के समय कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को धन्वंतरी का सागर से प्रादुर्भाव हुआ था। इसीलिये दीपावली के दो दिन पूर्व धनतेरस को भगवान धन्वंतरी का जन्म दिवस धनतेरस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन इन्होंने आयुर्वेद का भी प्रादुर्भाव किया था।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी – 26 अक्टूबर

रूप चतुर्दशी/नरक चतुर्दशी

दीपावली से ठीक एक दिन पूर्व रूप चतुर्दशी मनाई जाती है। इसे छोटी दीपावली भी कहते हैं। देह आचार का पालन करने की सीख देने वाले इस पर्व को नरक चतुर्दशी भी कहा जाता है। इस दिन भगवान विष्णुन की पूजा की जाती है। कहते हैं कि श्री कृष्ण ने इसी दिन अत्याचारी नरकासुर का वध करके सोलह हजार एक सौ कन्याओं को उसके बंदी गृह से मुक्त कराया था। इस दिन को लेकर शास्त्रों में कई कथाएं कही गई है। इन कथाओं का सार यह है कि इस दिन स्नान, व्रत व पूजा करने वालों को सौंदर्य की प्राप्ति होती है और नरक से मुक्ति मिलती है।

कार्तिक अमावस्या – 27 अक्टूबर

दीपावली, स्वामी दयानंद, महावीर निर्वाण दिवस

दीपावली हिंदुओं का सबसे बड़ा धार्मिक और सामाजिक पर्व है। यह अज्ञान पर ज्ञान की और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। इस दिन भगवान श्री राम चौदह वर्ष का वनवास पूरा कर अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जला खुशी मनाई। उस दिन से हम हर वर्ष दीपावली मनाते आ रहे हैं।

इस दिन जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। इसी दिन भगवान महावीर के प्रथम शिष्य गौतम गणधर को केवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई।

सिक्ख धर्म के अनुयायियों के लिए भी दीपावली का दिन बड़े महत्व का दिन है। सन् 1619 में दीपावली के दिन सिखों के छठे गुरु हरगोबिन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था। इसलिए सिक्ख समुदाय के लोग इस दिन को बन्दी छोड़ दिवस के रूप में मनाते हैं। अमृतसर स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास 1577 में इसी दिन हुआ था।

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा – 28 अक्टूबर

गोवर्धन पूजा – अन्नकूट

दीपावली के अगले दिन गोवर्धन जी की पूजा की जाती है, इसे अन्नकूट भी कहते हैं। ब्रज में गोबर के गोवर्धन बनाकर पूजा की जाती है, मन्दिरों में अन्नकूट होता है। कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने इस दिन इन्द्र का मानमर्दन कर गिरिराज पूजन किया और ब्रजवासियों को मूसलाधार वर्षा से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को 7 दिन तक अपनी सबसे छोटी अंगुली पर उठाकर रखा। सातवें दिन भगवान ने गोवर्धन को नीचे रखा और हर वर्ष गोवर्धन पूजा करके अन्नकूट उत्सव मनाने की आज्ञा दी।

कार्तिक शुक्ला द्वितीया – 29 अक्टूबर

भाई दूज, यम द्वितीया

कार्तिक शुक्ल की द्वितीया को भाई दूज (यम द्वितीया) मनाते हैं। बहनें अपने भाई के दीर्घायु एवं खुशहाल होने की कामना करती हैं। मानते हैं कि इस दिन यमुना ने अपने भाई यमराज को अपने घर सत्कारपूर्वक भोजन कराया था।

चित्रगुप्त जयंती

धर्मराज के दरबार में मनुष्यों के पाप–पुण्य का लेखा–जोखा रखने वाले देवता चित्रगुप्त की जयंती भी कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनाई जाती है। चित्रगुप्त कायस्थ समाज के आराध्य देव हैं। इस दिन कायस्थ लोग चित्रगुप्त का पूजन करते हैं। वे इस दिन बहीखातों की भी पूजा करते हैं।

कार्तिक शुक्ल तृतीया – 31 अक्टूबर

सरदार पटेल जयंती 'लौहपुरुष'

स्वाधीनता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी, प्रथम उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को नड़ियाद, गुजरात में हुआ। उनका पूरा नाम वल्लभभाई झवेरभाई पटेल गुर्जर था। वे कौटिल्य के समान कूटनीतिज्ञ और शिवाजी महाराज की तरह दूरदर्शी थे। आजादी के वक्त देश छोटी–छोटी रियासतों में बंटा हुआ था। रियासतों में बंटे भारत का एकीकरण करना बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य था जिसे उन्होंने बखूबी पूरा किया। सरदार पटेल ने 562 देसी रियासतों को बिना रक्त पात के भारत का हिस्सा बनाया। वे विश्व के अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इतने राज्यों का एकीकरण किया। इस महान योगदान के लिये उन्हें लौह पुरुष कहा जाता है।

कार्तिक शुक्ल चतुर्थी – 31 अक्टूबर

छठ पूजा प्रारम्भ

चार दिवसीय छठ पूजा उत्सव की शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को होती है।

कार्तिक शुक्ला पंचमी–लाभ पंचमी–1 नवंबर

दीपावली के बाद आने वाली कार्तिक शुक्ला पंचमी को लाभ पंचमी या सौभाग्य पंचमी कहा जाता है। इस दिन भगवान शिव की पूजा की जाती है। इस दिन को सभी सांसारिक कामनाओं की पूर्ति करने वाला दिन माना जाता है।

कार्तिक शुक्ला षष्ठी –2 नवंबर

छठ पूजा – डाला छठ

छठ पूजा बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश का लोक पर्व है। पिछले कुछ समय से यह पर्व देश के अन्य– हिस्सों में भी मनाया जाने लगा है। इस चार दिवसीय पर्व की शुरुआत कार्तिक शुक्ला चतुर्थी से हो जाती है। छठ पूजा में सूर्य भगवान और छठ मैया की पूजा की जाती है।

कार्तिक शुक्ला अष्टमी – 4 नवंबर

गोपाष्टमी

गोपाष्टमी भगवान श्री कृष्ण से जुड़ा पर्व है। यह गोवर्धन पूजा के सात दिन बाद मनाया जाता है। इस पर्व को मनाने के दो कारण बताए जाते हैं। कहते हैं कि भगवान श्री कृष्ण छह वर्ष की आयु में इस दिन पहली बार गाय चराने गए। दूसरा कारण यह बताया जाता है कि भगवान श्री कृष्ण ने इंद्र के प्रकोप से बचने के लिए सात दिन तक गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर उठाए रखा था, सातवें दिन कार्तिक शुक्ल अष्टमी को देवराज इंद्र के हार स्वीकार करने के बाद श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली से उतार कर नीचे रखा। इस दिन गाय और बछड़े को नहला कर उनका शृंगार किया जाता है और तिलक कर उनकी पूजा की जाती है। बहुत से लोग गोशालाओं में जाकर गायों को चारा और गुड़ खिलाते हैं। गो शालाओं में दान देते हैं।

पुष्कर मेला प्रारम्भ

अजमेर से 11 किमी. दूर हिंदुओं के पवित्र तीर्थ स्थल पुष्कर में कार्तिक पूर्णिमा को लगने वाले सात दिवसीय मेले की शुरुआत कार्तिक शुक्ला अष्टमी को होती है।

कार्तिक शुक्ला नवमी – 5 नवंबर

अक्षय नवमी, आंवला नवमी

नवमी को अक्षय नवमी तथा आंवला नवमी कहते हैं। मान्यता है कि नवमी से लेकर पूर्णिमा तक भगवान विष्णु आंवले के पेड़ पर निवास करते हैं। इस दिन आंवले के वृक्ष के साथ ही भगवान विष्णु की भी पूजा की जाती है। कहते हैं कि इस दिन आंवले के वृक्ष की पूजाकर दान–पुण्य करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। अक्षय नवमी के दिन आंवले के वृक्ष के नीचे भोजन बनाकर खाने की परम्परा है।

कार्तिक शुक्ल एकादशी – 8 नवंबर

देव उठनी एकादशी

कार्तिक मास की एकादशी को चातुर्मास का समापन होता है। मान्यता है कि आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवी–देवता चार माह के लिए शयन करने चले जाते हैं। चार मास के इस काल को चातुर्मास कहा जाता है। चातुर्मास में सगाई, विवाह जैसे मांगलिक कार्य नहीं होते। कार्तिक मास की शुक्ला पक्ष की एकादशी को देवता जागृत होते हैं इसलिए इस एकादशी को देवउठनी एकादशी कहते हैं।

नामदेव जयंती

संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर के समकालीन थे। उनका जन्म, कार्तिक शुक्ल एकादशी संवत् 1327 को पंढरपुर में नरसी ब्राह्मणी नामक ग्राम में दामा शेठ के यहां हुआ था। उन्होंने पूरे महाराष्ट्र के साथ उत्तर भारत का भ्रमण कर 'अभंग' (भक्ति–गीत) रचे और जनता को समता और प्रभु–भक्ति का पाठ पढ़ाया। इन्होंने हिन्दी में भी रचनाएं लिखीं। इनके रचे 61 पद सिक्खों की धार्मिक पुस्तक 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित हैं। इनके रचित अभंग पूरे महाराष्ट्र में भक्ति और प्रेम के साथ गाए जाते हैं। ये संवत् 1407 में समाधि में लीन हो गए।

तुलसी विवाह

कार्तिक माह की देवोत्थापन एकादशी के दिन तुलसी विवाह का आयोजन किया जाता है। कहते हैं कि विष्णु भगवान को तुलसी बेहद प्रिय हैं। इस दिन भगवान विष्णु चार महीने तक सोने के बाद जागते हैं और पहली प्रार्थना हरिवल्लभा तुलसी की ही सुनते हैं। तुलसी विवाह को देव जागरण के स्वागत का आयोजन माना जाता है। कार्तिक मास में स्नान करने वाले स्त्रियां भी कार्तिक शुक्ल एकादशी को सालिगराम और तुलसी का विवाह रचाती हैं।

कार्तिक शुक्ल द्वादशी – 9 नवंबर

कालिदास जयंती

कालिदास संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतम् और ऋतुसंहार जैसी उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों के रचयिता कालिदास ने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को अपनी कृतियों का आधार बनाया। कालिदास के जन्म स्थान और उनके जन्म के समय को लेकर कुछ भी स्पष्टता नहीं है। उस महान साहित्यकार को याद करने के लिए कार्तिक शुक्ल द्वादशी को उनकी जयंती मनाने की परम्परा शुरू की गई है।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी – 10 नवंबर

बीकानेर मेला

बीकानेर से लगभग 50 किलोमीटर दूर स्थित कपिल मुनि की तप:स्थली श्रीकोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगने वाला मेले की शुरुआत कार्तिक शुक्लि त्रयोदशी से होती है।

कार्तिक पूर्णिमा –12 नवंबर

कार्तिक पूर्णिमा का महत्व

शरद ऋतु की अंतिम तिथि कार्तिक पूर्णिमा अत्यंत पवित्र एवं पुण्य फलदायी मानी जाती है। इस दिन स्नान और दान का विशेष महत्व बताया गया है। कहा जाता है कि इस दिन गंगा स्नान करने वाले को पूरे वर्ष गंगा स्नान करने के बराबर पुण्य प्राप्त होता है। इस दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर नामक असुर का अंत किया था इसलिए इसे त्रिपुरी पूर्णिमा भी कहते हैं।

12 नवम्बर

पंडित मदन मोहन मालवीय पुण्यतिथि

देश को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय जैसा संस्थान देने वाले महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म इलाहाबाद में 25 दिसंबर 1861 को हुआ। महान स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद्, समाज सुधारक पंडित मदन मोहन मालवीय अपने महान कार्यों की वजह से महामना कहलाए। उन्होंने लगभग 50 साल तक कांग्रेस की सेवा की। वह चार बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। उन्होंने 1930 में गांधी द्वारा शुरू किये गए नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन में हिस्सा लेकर गिरफ्तारी दी। वे क्रांतिकारियों के वकील थे। उन्होंने 153 स्वतंत्रता सेनानियों को मौत की सजा से बचाया। उन्होंने 1915 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) की स्थापना की। उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन और बाल विवाह का विरोध करने के साथ ही महिलाओं की शिक्षा के लिए काम किया। हिंदू मुस्लिम एकता के लिए उन्होंने काफी प्रयास किये। 12 नवंबर, 1946 को उनका निधन हो गया। 24 दिसंबर, 2014 को उन्होंने भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया गया।

निम्बार्काचार्य जयंती

द्वैताद्वैत का दर्शन का प्रतिपादन करने वाले निम्बार्काचार्य का जन्म कार्तिक पूर्णिमा के दिन हुआ। उनके समय को लेकर दो मत प्रचलित हैं। कुछ लोग मानते हैं कि उनका प्रादुर्भाव 13वीं शताब्दी में हुआ, वहीं निम्बार्क सम्प्रदाय का मानना है उनका प्रादुर्भाव द्वापर के अन्त में आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व 3096 ई.पू. हुआ। उनका जन्म स्थान वर्तमान आंध्र प्रदेश में है। निम्बार्काचार्य वैष्णव आचार्यों में प्राचीनतम माने जाते हैं। उन्हें कृष्ण के प्रपौत्र बज्रनाभ और परीक्षित पुत्र जनमेजय के समकालीन माना जाता है।

साक्षी
(लेखिका)
राजस्थान

सुहाग का पर्व

करवा चौथ

करवा चौथ आस्था और प्रेम का त्यौहार है। इस दिन विवाहित महिलाएं अपने पति की लम्बी आयु के लिए उपवास करती हैं। पूरे दिन निराहार रहती हैं। रात में चंद्र दर्शन के बाद ही व्रत खोलती हैं। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान और उत्तर प्रदेश में यह त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। यह पर्व कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। इस पर्व के दिन महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता है। पूरे दिन निराहार रहने के बाद भी उनके उत्साह में कोई कमी नजर नहीं आती। हाथों में मेहदी लगाती है, सज संवर कर चंद्रोदय का इंतजार करती हैं। चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद भोजन करती हैं। इस दिन शिव–पार्वती, कार्तिकेय, गणेश एवं चंद्रमा की पूजा की जाती है। देश के कई हिस्सों में चौथ माता के मंदिर भी बने हुए हैं। चौथ माता का सबसे प्राचीन मंदिर राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले के बरवाड़ा गांव में है। चौथ माता के मंदिर की वजह से गांव का नाम चौथ का बरवाड़ा पड़ गया।

सरगी : पंजाब में करवा चौथ का त्यौहार सरगी के साथ आरम्भ होता है। सरगी भोजन से सजी थाली होती है जो सास अपनी बहुओं को देती हैं। इस थाली में दूध फीणी, फल और अन्य तरह के पकवान होते हैं। बहुएं सरगी में मिला भोजन करने के बाद पूरे दिन निराहार और निर्जल रहती है। इसलिए सरगी में ऐसा भोजन दिया जाता है जो पूरे दिन ऊर्जा देता है।

कथा : प्राचीनकाल में एक ब्राह्मण था। उसके चार लड़के एवं एक गुणवती लड़की थी। लड़की अपने भाइयों की दुलारी थी। एक बार वह मायके आई हुई थी, तभी करवा चौथ का व्रत आया। उसने पूरे दिन निर्जल रहकर विधिपूर्वक व्रत किया। बहन को भूखी प्या सी देख भाई चिंतित हो उठे। एक भाई पीपल के पेड़ पर छलनी लेकर चढ़ गया और दीपक जलाकर छलनी से रोशनी उत्पन्न कर दी। दूसरे भाई ने बहन को आवाज देकर कहा कि दीदी देखो, चंद्रमा निकल आया है, पूजन कर भोजन ग्रहण करो। बहन ने भोजन ग्रहण किया। भोजन ग्रहण करते ही उसके पति की मृत्यु हो गई। अब वह दु:खी हो विलाप करने लगी, तभी वहां से रानी इंद्राणी निकल रही थीं। उनसे उसका दु:ख न देखा गया। ब्राह्मण कन्या ने उनके पैर पकड़ लिए और अपने दु:ख का कारण पूछा, तब इंद्राणी ने बताया– तूने बिना चंद्र दर्शन किए करवा चौथ का व्रत तोड़ दिया इसलिए यह कष्ट मिला। अब तू वर्ष भर चौथ का व्रत नियमपूर्वक करना तो तेरा पति जीवित हो जाएगा। उसने इंद्राणी के कहे अनुसार चौथ व्रत किया तो पुन: सौभाग्यवती हो गई। इसलिए प्रत्येक स्त्री को अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत करना चाहिए।

राही
(लेखक)
राजस्थान

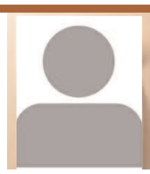

पुण्य स्नान का पर्व
कार्तिक पूर्णिमा

शरद ऋतु की अन्तिम तिथि कार्तिक पूर्णिमा को हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन किए स्नान, दान, हवन, यज्ञ व उपासना आदि का फल अनन्त होता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन देश में पुष्कर, सोनपुर, गढ़मुक्तेश्वर, मेरठ, बटेश्वर, आगरा और कोलायत सहित कई स्थानों पर मेले लगते हैं। श्रद्धालुजन इस दिन पवित्र नदियों और सरोवरों में स्नान कर पूजा पाठ और दान करते हैं। पुष्कर, कुरुक्षेत्र, गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, गंडक, अयोध्या तथा वाराणसी इस दिन स्नान और दान के लिए अति महत्वपूर्ण माने जाते हैं। कार्तिक पूर्णिमा का स्नान, शीत ऋतु से पहले का अन्तिम गंगा स्नान होता है। इसे साधारण स्नान नहीं माना जाता। मान्यता है कि इस दिन गंगा स्नान करने वाले को पूरे वर्ष गंगा स्नान करने का फल मिलता है। पुराणों में कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा को अति पुष्करिणी कहा गया है। मान्यता है कि कोई व्यक्ति केवल इन तीन दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करे तो उसे पूरे कार्तिक मास स्नान करने के बराबर पुण्य मिलता है।

हिंदू धार्मिक ग्रंथों में कार्तिक पूर्णिमा के दिन को लेकर अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। मान्यता है कि इस दिन अजमेर के निकट पुष्कन के ब्रह्म सरोवर में ब्रह्मा जी का अवतरण हुआ था। इसी मान्यता के चलते प्रतिवर्ष लाखों तीर्थ यात्री कार्तिक पूर्णिमा पर पुष्कर आते हैं, पवित्र पुष्कर सरोवर में स्नान कर ब्रह्मा जी के मंदिर में पूजा कर दीपदान करते हैं। कहते हैं कि इस दिन भगवान शंकर ने त्रिपुरासुर नामक असुर का अंत किया और त्रिपुरारी के रूप में पूजित हुए इसलिए कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु ने सातवें मनु वैवत्सय की रक्षा के लिये मत्स्यावतार लिया। मानव जाति का उद्गम सातवें मनु से ही माना गया है।

ब्रजमण्डल और कृष्णोपासना से प्रभावित अन्य प्रदेशों में इस समय रासलीला होती है। माना जाता है कि कार्तिक पूर्णिमा को गोलोक के रासमण्डल में श्री कृष्ण ने श्री राधा का पूजन किया था। यह भी मान्यता है कि गोलोक में इस दिन राधा उत्सव मनाया जाता है तथा रासमण्डल का आयोजन होता है। कार्तिक पूर्णिमा को श्री हरि के बैकुण्ठ धाम में देवी तुलसी का प्राकट्य हुआ। कार्तिक पूर्णिमा को ही देवी तुलसी ने पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था।

कहते हैं कि महाभारत काल में हुए विनाशकारी युद्ध में मरने वाले योद्धाओं और सगे संबंधियों को देखकर युधिष्ठिर विचलित हो गए। इस पर भगवान श्री कृष्ण पांडवों को साथ लेकर गढ़ खादर के विशाल रेतीले मैदान पर आए। कार्तिक शुक्ल अष्टमी से लेकर कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तक गंगा किनारे यज्ञ किया। इसके बाद रात में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दीपदान करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इसलिए इस दिन गढ़मुक्तेश्वर तीर्थ स्नान करने का विशेष महत्व है।

सिक्ख सम्प्रदाय में कार्तिक पूर्णिमा को प्रकाशोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सिक्खों के प्रथम गुरु, गुरु नानक देव का जन्म हुआ था। इस दिन को गुरु पर्व भी कहा जाता है।

ब्रह्मा जी से वरदान मिलने के बाद त्रिपुरासुर अमर हो गया। उसने देवताओं पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। तीनों लोकों में उसका आतंक फैल गया। उसने स्वर्ग लोक पर भी अधिकार जमा लिया। आतंकित और त्रस्त देवताओं ने ब्रह्मा जी से मिलकर त्रिपुरासुर के अंत का उपाय पूछा।

देव दीपावली

एक दैत्य था उसका नाम था त्रिपुरासुर। त्रिपुरासुर ने प्रयाग में कठोर तप कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर लिया। उनसे वरदान मांगा कि देवता, स्त्री, पुरुष, जीव, जंतु, पक्षी, निशाचर उसे मार न पाएं। ब्रह्मा जी से वरदान मिलने के बाद त्रिपुरासुर अमर हो गया। उसने देवताओं पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। तीनों लोकों में उसका आतंक फैल गया। उसने स्वर्ग लोक पर भी अधिकार जमा लिया। आतंकित और त्रस्त देवताओं ने ब्रह्मा जी से मिलकर त्रिपुरासुर के अंत का उपाय पूछा।

ब्रह्मा जी ने देवताओं को भगवान शंकर के पास जाने को कहा। सभी देवता भगवान शंकर के पास पहुंचे और उनसे त्रिपुरासुर से छुटकारा दिलाने की प्रार्थना की। तब महादेव ने त्रिपुरासुर का वध करने का निर्णय किया। कार्तिक पूर्णिमा के दिन महादेव ने प्रदोष काल में अर्धनारीश्वर के रूप में त्रिपुरासुर का वध किया। उसी दिन देवताओं ने काशी में आकर दीपावली मनाई। तभी से काशी में कार्तिक पूर्णिमा पर देव दीपावली मनाने की परम्परा चली आ रही है। माना जाता है कि कार्तिक पूर्णिमा को काशी में दीपदान करने से पूर्वजों को मुक्ति मिलती है।

भगवान विष्णु का जागरण

माना जाता है कि भगवान विष्णु के योग निद्रा से जागने की खुशी में समस्त देवी–देवताओं ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन लक्ष्मी–नारायण की आरती कर दीप प्रज्वलित किए।

सुनीता माहेश्वरी
(लेखिका)
राजस्थान

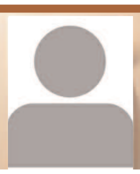

संस्कृति में महत्व बिटिया का

तुलसी विवाह

औषधीय गुणों से युक्त तुलसी को पवित्र माना जाता है। कार्तिक महीने में तुलसी की पूजा की जाती है। श्रद्धालु जन सुबह स्नान के पश्चातत तुलसी को जल चढ़ाते हैं, शाम के वक्त दीपक करते हैं। मान्यता है कि घर में तुलसी का पौधा लगाने से घर के सभी सदस्यत स्वस्थ रहते हैं। सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर हो जाते हैं। तुलसी की पूजा करने से पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार तुलसी भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय हैं इसलिए तुलसी की पूजा कर भगवान विष्णु को प्रसन्न किया जा सकता है। भक्त जन देवउठनी एकादशी के दिन तुलसी का भगवान विष्णु के साथ विवाह भी करवाते हैं। कहते हैं कि भगवान विष्णु देवउठनी एकादशी के दिन चार माह की योग निद्रा से जागते हैं।

तुलसी विवाह को देव जागरण के स्वागत का आयोजन माना जाता है। तुलसी विवाह में मंडप सजता है, हवन होता है, वर के रूप में भगवान विष्णु की सालिगराम के रूप में वर पूजा होती है। तुलसी को लाल चुनरी ओढ़ाकर उसका कन्यादान किया जाता है और फिर प्रीतिभोज होता है। तुलसी विवाह में शृंगार के सभी सामान चढ़ावे के लिए रखे जाते हैं। यजमान सालिगराम को लेकर भगवान विष्णु के रूप में और यजमान की पत्नी तुलसी के पौधे को लेकर अग्नि के फेरे लेते हैं। कार्तिक मास में स्नान करने वाली

स्त्रियां भी कार्तिक शुक्ल एकादशी को सालिगराम और तुलसी का विवाह रचाती हैं।

तुलसी विवाह कथा

राक्षस कुल में जन्मी वृंदा भगवान विष्णु की परम भक्त थी। वृंदा का विवाह समुद्र मंथन से उत्पन्न हुए दानव राज जलंधर से हुआ। जलंधर बहुत ही वीर और पराक्रमी था। देवता उससे आतंकित थे। कहते हैं कि उसके अजेय होने का कारण वृंदा थी। वृंदा पतिव्रता स्त्री थी, सदा अपने पति की सेवा किया करती थी। वृंदा का पतिव्रत धर्म जलंधर की रक्षा करता था। एक बार देवासुर संग्राम में जब जलंधर युद्ध पर जाने लगा तो वृंदा ने कहा कि आप जब तक युद्ध में रहेंगे, मैं पूजा में बैठकर आपकी जीत के लिए अनुष्ठान करूंगी।

जलंधर के जाते ही वृंदा पूजा में बैठ गई। उसके व्रत के

वृंदा ने भगवान विष्णु को एक श्राप और दिया कि वह अपनी पत्नी से अलग हो जाएंगे। इसी श्राप के कारण राम अवतार के समय भगवान को माता सीता से अलग रहना पड़ा।

प्रभाव से जलंधर अजेय हो गया। उसे कोई पराजित नहीं कर पाया। यहां तक कि देवों के देव महादेव भी जलंधर को पराजित नहीं कर पा रहे थे। देवता हारने लगे। पराजय निकट देख भगवान शिव समेत सभी देवता भगवान विष्णु के पास पहुंचे और उनसे जलंधर को पराजित करने की प्रार्थना की। इस पर भगवान विष्णु ने जलंधर का रूप धरा और वृंदा के महल में पहुंच गए।

वृंदा जलंधर का वेश धारण किये भगवान विष्णु को अपना पति समझ पूजा से उठ गई और उनके चरण छू लिए। वृंदा का संकल्प टूटते ही जलंधर अजेय नहीं रहा, देवताओं ने जलंधर को मार दिया और उसका सिर काट कर अलग कर दिया। जलंधर का कटा हुआ सिर जब उसके महल में जाकर गिरा तो वृंदा ने जलंधर का रूप धरे भगवान की ओर आश्चर्य से देखा। इस पर भगवान विष्णु अपने असली रूप में आ गए। वृंदा ने कुपित होकर भगवान को पत्थर बन जाने का श्राप दे दिया। भगवान तुरंत पत्थर के हो गए। इससे देवताओं में हाहाकार मच गया। देवताओं की प्रार्थना के बाद वृंदा ने अपना श्राप वापस ले लिया।

वृंदा ने भगवान विष्णु को एक श्राप और दिया कि वह अपनी पत्नी से अलग हो जाएंगे। इसी श्राप के कारण राम अवतार के समय भगवान को माता सीता से अलग रहना पड़ा।

वृंदा अपने पति का सिर गोद में लेकर सती हो गईं। उनकी राख से एक पौधा निकला। भगवान विष्णु ने उस पौधे का नाम तुलसी रखा और कहा कि मैं तुलसी के साथ पत्थर के रूप में रहूंगा। तभी से तुलसी की पूजा होने लगी।

मनोहरलाल मूंदड़ा
(लेखक)
राजस्थान

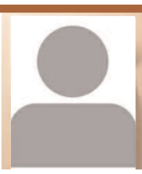

गजवाहिनी एवं उलूकवाहिनी श्री लक्ष्मी

दीपावली की रात हम शुद्ध सत्वमयी, समस्त सम्पत्तियों की अधिष्ठात्री मां लक्ष्मी का आह्वान और उनकी पूजा करते हैं। मां लक्ष्मी केवल धन की ही नहीं, सत्ता, सम्मान, गौरव, सद्गुण और बुद्धि की भी देवी हैं। समस्त चर अचर जगत में व्याप्त है। उसके अनेकानेक रूप हैं। मनुष्यन मां का अपने मनोनुकूल स्वरूप का आह्वान और उसकी अराधना करता है। मां के अनेकानेक रूपों में से आठ रूप और चार वाहन ज्यादा प्रचलित हैं। मां के हर स्वरूप और हर वाहन के गहरे अर्थ हैं।

मां लक्ष्मी के आठ स्वरूप निम्न लिखित हैं।

आदि लक्ष्मी
धन लक्ष्मी
धान्य लक्ष्मी
राज लक्ष्मी
संतान लक्ष्मी
धैर्य लक्ष्मी या वीर लक्ष्मी
विजय लक्ष्मी
विद्या लक्ष्मी

आदि लक्ष्मी

आदि लक्ष्मी जीव जंतुओं को प्राण देती हैं। तीनों देव इन्हीं से प्रकट हुए। इन्हीं से महाकाली और सरस्वती ने आकार लिया। ये ही जीवन का आधार हैं।

धनलक्ष्मी

धनलक्ष्मी धन की प्रदाता हैं।

धान्य लक्ष्मी

धान्य लक्ष्मी अन्न भोजन की देवी हैं।

राजलक्ष्मी / गजलक्ष्मी

राजलक्ष्मी कृषि और उर्वरता की देवी हैं।

संतान लक्ष्मी

संतान की देवी मानी जाती हैं।

धैर्य लक्ष्मी / वीर लक्ष्मी

वीरता और धैर्य प्रदान करने वाली देवी हैं।

विजय लक्ष्मी

विजय की कामना रखने वाले विजय लक्ष्मी की उपासना करते हैं।

विद्या लक्ष्मी

विद्या लक्ष्मी बुद्धि, ज्ञान और तमाम कलाओं की अधिष्ठात्री देवी हैं।

हाथी समूह में रहने वाला, समूह के प्रति अपने दायित्वों की पूर्ति करने वाला कर्मठ और बुद्धिमान जानवर है। गज वाहिनी लक्ष्मी वस्तुतः ऐश्वर्य और बुद्धि की प्रदाता हैं। यह धन के साथ बुद्धि और साथ विवेक भी देती हैं।

लक्ष्मी का एक रूप पृथ्वी भी माना जाता है। इसी लिए प्रात:काल शैया से उतरते वक्त धरती पर पांव रखने से पहले धरती से उन्हें विष्णु पत्नी के रूप संबोधित करते हुए क्षमा याचना की जाती है।

समुद्र वसने देवी पर्वत स्तन मण्डले
विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यम् पाद स्पर्श क्षमस्वमे।

मां लक्ष्मी के चार और स्वरूपों की अराधना की जाती है जिनमें वे अलग–अलग वाहनों पर सवार हैं। ये चार स्वरूप हैं –

गज वाहिनी
सिंह वाहिनी
गरुड़ वाहिनी
उलूक वाहिनी

गज वाहिनी लक्ष्मी

हाथी समूह में रहने वाला, समूह के प्रति अपने दायित्वों की पूर्ति करने वाला कर्मठ और बुद्धिमान जानवर है। गज वाहिनी लक्ष्मी वस्तुतः ऐश्वर्य और बुद्धि की प्रदाता हैं। यह धन के साथ बुद्धि और साथ विवेक भी देती हैं। यही धर्म लक्ष्मी हैं। मां लक्ष्मी के इसी स्वरूप की अराधना सबसे

अयोध्या, उज्जैन और मथुरा के आस–पास के प्राचीन राजाओं शिवदत्त, पांचाल, रज्जुमल, अगामास, सोडास के सिक्कों पर विशिष्ट प्रकार के सूतन पहने और कान में बाला पहने नृत्य करती हुई स्त्री की पहचान भी लक्ष्मी के रूप में की गई है।

अधिक होती है।

सिंह वाहिनी

सिंह शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है। लक्ष्मी जी जब सिंह पर सवार होती हैं तब वह कर्म लक्ष्मी कहलाती हैं।

गरुड़ वाहिनी

गरुड़ पक्षियों में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। गरुड़ समझदार और बुद्धिमान होने के साथ–साथ तेज गति से उड़ने की क्षमता रखता है। मां लक्ष्मी अपने इस स्वरूप में भगवान विष्णु के साथ गरुड़ पर सवार होती है।

उलूक वाहिनी

उलूक पक्षियों में सबसे अलग है। उसमें जो विशेषताएं हैं वे किसी अन्य पक्षी में नहीं पाई जाती। उल्लू रात के अंधेरे में देखने में सक्षम होता है।

प्राचीन काल के सिक्कों पर खड़ी या बैठी लक्ष्मी एवं विशेष रूप से गजलक्ष्मी का अंकन बहुतायत से मिलता है। इसमें देवी के दोनों ओर हाथी अपनी सूण्ड से जलवृष्टि करते हैं। अयोध्या, उज्जैन और मथुरा के आस–पास के प्राचीन राजाओं शिवदत्त, पांचाल, रज्जुमल, अगामास, सोडास के सिक्कों पर विशिष्ट प्रकार के सूतन पहने और कान में बाला पहने नृत्य करती हुई स्त्री की पहचान भी लक्ष्मी के रूप में की गई है। कुणीन्द के सिक्कों पर श्री वृद्धि करने वाली देवी लक्ष्मी को कमल पर खड़ी और दाहिने हाथ में कमल पुष्प लिए अंकित की गई है।

प्रतीकों की भाषा को समझने वालों ने मां लक्ष्मी जी की प्रतिमा के निर्माण के लिए दिशा निर्देश तय कर रखे हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

1 लक्ष्मी जी की ग्रीवा में कमल माला पहने कमलासीन और दोनों हाथों में कमल दिखाने चाहिए।

2 देवी के दोनों ओर एक–एक हाथी उनके मस्तक पर जलवृष्टि करते हुए प्रदर्शित होने चाहिए साथ ही दोनों ओर आकाशकुमारियां जल से पूर्ण कलश लिए होनी चाहिए।

3 विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार बहुमूल्य जवाहरात से निर्मित स्वर्ण आभूषण धारण तथा कानों में रत्नजड़ित कुण्डल होने चाहिए।

4 शिल्प रत्न में बायें हाथ में कमल और दायें हाथ में विशिष्ट फल होना चाहिए। इसमें लक्ष्मी जी का श्वेत रंग बताया गया है।

5 यदि लक्ष्मी जी को भगवान विष्णु के साथ अंकित करना हो तो उस स्थिति में दो कलशों से जल निस्तारित करती हुई देवी के दो हाथ होने चाहिए। किन्तु स्वतंत्र अंकन में लक्ष्मी जी के चार हाथ जिनमें कमल, अमृत–घट, शंख एवं विशिष्ट फल चित्रित होने चाहिए।

सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल लक्ष्मी जी के साथ सम्बद्ध वस्तुओं के प्रतीकात्मक महत्व के बारे में बताते हुए कहते हैं कि देवी के साथ प्रदर्शित हाथी दिशाओं के सूचक है। घड़ों में भरे जल को अमृत कहा जा सकता है। कमल समुद्र से जुड़ा हुआ माना गया है जो दिव्य जल का अनन्त स्रोत है, जिसे 'समुद्र सलिल' की संज्ञा दी गई है।

VEER LAXMI
GAJA LAXMI
SANTHAN LAXMI
DHANY LAXMI
VIJAYA LAXMI
ADHI LAXMI
ASWARYA LAXMI
DHANA LAXMI

गजवाहिनी लक्ष्मी की कथा

एक बार वेदव्यास जी हस्तिनापुर पधारे तब धृतराष्ट्र ने गांधारी एवं कुंती सहित उनका आदर सत्कार और पूजन किया। गांधारी एवं कुंती ने उनसे गज लक्ष्मी के पूजन की विधि पूछी। आपने विधि बताई। दोनों ने विधिवत व्रत पूजन किया। व्रत के सोलहवें दिन गांधारी ने राजमहलों में हाथी का पूजन रखा। इधर, कुंती ने भी प्रतीकात्मक रूप से कागज का हाथी बनाया। दोनों ने ही नगर की सभी महिलाओं को पूजन के लिए आमंत्रित किया। सभी महिलाएं गांधारी के यहां पूजा थाल लेकर जाने लगी। यह देखकर कुंती उदास हो गई। पांडवों ने माता से उदास होने का कारण पूछा। कारण जानकर कुंती को कहा कि आप नगर में कहलवा दें कि हमारे यहां स्वर्ग लोक से इन्द्र का ऐरावत हाथी पूजन के लिए आया है। सूचना करवाई। अर्जुन ने अपने बल से ऐरावत को बुलवा लिया। जो स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित था। सूचना मिलते ही नगर के पुरुष, बच्चे सभी पांडवों के निवास स्थल की ओर चल पड़े। जो महिलाएं गांधारी के यहां गईं वे भी पूजा के थाल उठाकर कुंती के यहां जाने लगी। सभी उस सुंदर गज को देखकर मोहित हो रहे थे। राजपुरोहित ने एक मिट्टी से निर्मित लक्ष्मी जी का स्वरूप ऐरावत हाथी के ऊपर विराजमान कर दिया।

उलूकवाहिनी लक्ष्मी

एक बार सभी देवी देवता बिना वाहन पृथ्वी पर विचरण करने आए। सभी जीवों ने देखा कि हमारे जीवन–दाता, अन्नदाता पैदल घूम रहे हैं तो क्यों न हम इनके वाहन बनकर अपना जीवन सफल बनावें। अतः हिंसक– अहिंसक सभी प्रकार के जीव उनके पास पहुंचकर उनसे स्वयं को वाहन के रूप में चुनने की विनती करने लगे। इन्हें झगड़ते देख लक्ष्मी जी ने कहा कि मैं कुछ समय बाद विचार करके आऊंगी। यह कहकर वहां से चल दीं। तत्पश्चात दीपावली की रात्रि को, जो कि अमावस्या होती है, लक्ष्मी जी भ्रमण पर निकलीं। रात्रि एवं अंधेरा होने से अन्य जीव उन्हें देख नहीं पाए, किन्तु उल्लू ने उन्हें देख लिया और तुरन्त उनके पास पहुंच गया। लक्ष्मी जी ने उस पर कृपा करके अपना वाहन बना लिया।

दंभी दशानन का दहन

डोली भूमि गिरत दसकंधर,
छुभित सिंधु सरिं दिग्गज भूधर...

विजयदशमी पर देशभर में जगह–जगह अहंकारी रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों का दहन किया गया। असत्य पर सत्य की जीत के संदेश वाले इस दिन पर उदयपुर के महाराणा भूपाल स्टेडियम में दहन के दौरान यह नजारा ऐसा बन पड़ा मानो आसमान से चिंगारियां बरस रहीं हो।

रेणु सिंह
(लेखिका)
बिहार

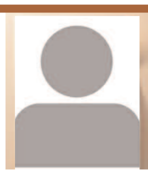

सूर्य उपासना का महापर्व छठ

कोलकाता.
छठ सूर्य उपासना का महापर्व है। इस चार दिवसीय महापर्व की शुरुआत कार्तिक शुक्ल की चतुर्थी को होती है। षष्ठी की शाम अस्ताचलगामी सूर्य और सप्तमी की सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अपर्ण के साथ इस पर्व का समापन होता है। 36 घंटे उपवास का यह कठिन लोकपर्व मुख्य रूप से पूर्वी भारत के बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है। प्रायः हिन्दुओं द्वारा मनाए जाने वाले इस पर्व को अन्य धर्मावलम्बी भी मनाने लगे हैं। बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में इस पर्व को लेकर एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है।

मूलतः सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में। चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। यह पर्व पारिवार की सुख–समृद्धी तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए मनाया जाता है। स्त्री और पुरुष समान रूप से इस पर्व को मनाते हैं।

सूर्य की शक्तियों का मुख्य स्रोत उनकी पत्नी ऊषा और प्रत्यूषा हैं। छठ में सूर्य के साथ–साथ दोनों शक्तियों की संयुक्त आराधना होती है। प्रातः वेला में सूर्य की पहली किरण (ऊषा) और सांध्य वेला में सूर्य की अंतिम किरण (प्रत्यूषा) को अर्घ्य देकर दोनों का नमन किया जाता है।

चारों दिन अलग–अलग विधि से की जाती है पूजा

पहले दिन नहाय–खाय

पहले दिन व्रती नहाय–खाय की विधि पूरा करते हैं। इस दिन छठव्रती सुबह गंगा स्नान करते हैं। गंगा स्नान की सुविधा न हो तो घर में ही स्नान कर शुद्ध होते हैं। फिर अरवा चावल, चने की दाल, शुद्ध घी एवं लौकी की सब्जी का सेवन कर पूजा की तैयारी शुरू करते हैं। छठ व्रती व्रत के दौरान प्याज–लहसुन का सेवन नहीं करते। धीरे–धीरे पूजा की सामग्री जैसे– कलसूप, दौरा, आम की लकड़ी, दीया, ढकनी आदि की खरीदारी करना शुरू कर देते हैं।

ईष्ट देवता की आराधना कर उन्हें भोग–सामग्री अर्पित करने के बाद प्रसाद के रूप में रोटी और खीर ग्रहण करते हैं। प्रसाद ग्रहण के बाद से छठ व्रती 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू करते हैं।

दूसरे दिन खरना– लोहंडा

महापर्व के दूसरे दिन व्रती खरना अथवा लोहंडा की विधि करते हैं। इसके तहत व्रती शाम में मिट्टी के नए चूल्हे में आम की लकड़ी जलाकर गेंहू के आंटे की रोटी और गुड़ की खीर बनाते हैं।

ईष्ट देवता की आराधना कर उन्हें भोग–सामग्री अर्पित करने के बाद प्रसाद के रूप में रोटी और खीर ग्रहण करते हैं। प्रसाद ग्रहण के बाद से छठ व्रती 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू करते हैं।

तीसरे दिन अस्ताचलगामी सूर्य को पहला अर्घ्य

तीसरे दिन शाम व्रती अस्ताचलगामी सूर्य को पहला अर्घ्य अर्पित करते हैं। कलसूप में फल, ठेकुआ, जलता दीपक वगैरह रखकर सूर्य की आरती कर अर्घ्य देते हैं।

चौथे दिन उदीयमान सूर्य को अर्घ्य

चौथे दिन सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य अपर्ण करते हैं। फिर कलसूप में फल, ठेकुआ, जलता दीपक वगैरह रखकर सूर्य

एक कथा के अनुसार राजा प्रियवद के कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञाहुति के लिए बनायी गयी खीर दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ।

की आरती कर अर्घ्य देते हैं। इसके साथ ही चार दिवसीय महापर्व सम्पन्न हो जाता है।

कौन हैं देवी षष्ठी और कैसे हुई उत्पत्ति

मान्यता के अनुसार छठ देवी को सूर्य देव की बहन बताया जाता है, लेकिन छठ व्रत कथा के अनुसार छठ देवी ईश्वर की पुत्री देवसेना बताई गई हैं। देवसेना अपने परिचय में कहती हैं कि वह प्रकृति की मूल प्रवृत्ति के छठवें अंश से उत्पन्न हुई हैं, यही कारण है कि मुझे षष्ठी कहा जाता है। देवी कहती हैं यदि आप संतान प्राप्ति की कामना करते हैं तो मेरी विधिवत पूजा करें। यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को करने का विधान बताया गया है।

छठ पूजा की पौराणिक कथाएं

पहली कथा

छठ पूजा को लेकर अलग–अलग पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। मान्यता है कि सर्व प्रथम देव माता अदिति ने छठ पूजा की थी। एक कथा के अनुसार प्रथम देवासुर संग्राम में जब असुरों के हाथों देवता हार गए थे, तब देव माता अदिति ने तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति के लिए देवारण्य के देव सूर्य मंदिर में छठी मैया की आराधना की थी। तब प्रसन्न होकर छठी मैया ने उन्हें सर्वगुण संपन्न तेजस्वी पुत्र होने का वरदान दिया था। इसके बाद अदिति के पुत्र हुए त्रिदेव रूप आदित्य भगवान, जिन्होंने असुरों पर देवताओं को विजय दिलाई। उसी समय से देव सेना का नाम षष्ठी देवी हो गया और छठ पूजा का चलन भी शुरू हो गया।

दूसरी कथा

एक कथा के अनुसार राजा प्रियवद के कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञाहुति के लिए बनायी गयी खीर दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ। प्रियंवद पुत्र को लेकर श्मशान गये और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे। उसी वक्त ब्रह्माजी की मानस कन्या देवसेना प्रकट हुई और कहा कि सृष्टि की मूल प्रवृत्ति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण मैं षष्ठी कहलाती हूं। हे राजन्! आप मेरी पूजा करें तथा लोगों को भी पूजा के प्रति प्रेरित करें। राजा ने पुत्र इच्छा से देवी षष्ठी का व्रत किया और उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को हुई थी।

तीसरी कथा

एक अन्य कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गए तब श्री कृष्ण के कहने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा। इससे उनकी मनोकामनाएं पूरी हुईं तथा पांडवों को राजपाट वापस मिला। लोक परम्परा के अनुसार सूर्यदेव और छठी मैया का सम्बन्ध भाई–बहन का है। लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्य ने ही की थी।

चौथी कथा

सूर्यदेव के अनुष्ठान से अविवाहित कुंती को पुत्र के रूप में कर्ण की प्राप्ति हुई थी। कुंती ने जन्म देने के बाद कर्ण को नदी में प्रवाहित कर दिया था। वह भी सूर्यदेव के उपासक थे। वे घंटों जल में रहकर सूर्य की पूजा करते। मान्यता है कि कर्ण पर सूर्य की असीम कृपा हमेशा बनी रही। इसी कारण लोग सूर्यदेव की कृपा पाने के लिये भी कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्योपासना करते हैं।

यूं तो छठ पूजा के लिए प्रत्येक दिन के लिए अलग–अलग तरह के गीत होते हैं, लेकिन आधुनिकता के दौर में सभी दिन के गीत एक साथ सुनने को मिलने लगे हैं। पारम्परिक छठ गीतों के अलावा आधुनिक फिल्मी और भोजपुरी गीतों की धुन पर भी सूर्यदेव और छठी मईया के अराधना एवं उपासना के गीत बजने लगे हैं।

पांचवी कथा

पौराणिक ग्रंथों में भगवान श्री राम के अयोध्या आने के पश्चात माता सीता के साथ मिलकर कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्योपासना करने से भी जोड़ा जाता है, महाभारत काल में कुंती द्वारा विवाह से पूर्व सूर्योपासना से पुत्र की प्राप्ति से भी इसे जोड़ा जाता है।

उत्साह

दीपावली की समाप्ति के साथ ही लोगों में सूर्य उपासना के महापर्व का उत्साह भर जाता है। बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में चारों ओर छठी मईया की अराधना के गीत गूंजने लगते हैं। घर हो या गली–मोहल्ला या फिर बाजार सभी ओर छठी मईया की अराधना के गीत सुनाई देने लगते हैं। कहीं बड़े–बड़े साउंड बॉक्स लगा कर छठ के गीत बजाए जाते हैं तो कहीं घरों में एक साथ झुंड में बैठ कर महिलाएं सूर्यदेव एवं छठी मईयां के अराधना के गीत गाती हैं।

''पटना से केरवा मंगइनी, बलका दिहलें जुठियाए...., केरवा जे फरेला गवद से ओह पर सुगा मंडराय..., कांच ही बांस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाय, भोर भईल मोरवा बोले भईल अर्घ्य के बेर, बन ना बलम जी कहरिया..., जैसे छठ गीतों से आस्था के महापर्व को लेकर वातावरण धीरे–धीरे भक्तिमय हो जाता है। यूं तो छठ पूजा के लिए प्रत्येक दिन के लिए अलग–अलग तरह के गीत होते हैं, लेकिन आधुनिकता के दौर में सभी दिन के गीत एक साथ सुनने को मिलने लगे हैं। पारम्परिक छठ गीतों के अलावा आधुनिक फिल्मी और भोजपुरी गीतों की धुन पर भी सूर्यदेव और छठी मईया के अराधना एवं उपासना के गीत बजने लगे हैं।

छठ पूजा 2019 की तारीख

31 अक्टूबर– नहाय खाय

01 नवम्बर – खरना

02 नवम्बर – पहला अर्घ्य

03 नवम्बर– दूसरा अर्घ्य

कौशल मूंदड़ा
(लेखक)
राजस्थान

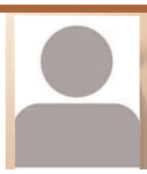

सिक्ख पंथ प्रवर्तक

गुरु नानक देव

सिक्ख धर्म के अनुयाइयों के लिए कार्तिक पूर्णिमा का दिन अत्यंत महत्वपूर्ण है। सिख धर्म के संस्थापक एवं सिक्खों के प्रथम गुरु, गुरु नानक देव का जन्म 1469 ईस्वी में लाहौर से करीब 30 मील दूर दक्षिण पश्चिम में रावी नदी के किनारे स्थित तलवंडी रायभोय गांव में हुआ। बाद में इस गांव को ननकाना साहब नाम दिया गया। इस दिन को प्रकाशोत्सव एवं गुरु पर्व भी कहते हैं। यह पर्व पूरी दुनिया में आस्था, श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। इस दिन गुरुद्वारों में शबद–कीर्तन किए जाते हैं। जगह–जगह लंगर का आयोजन होता है और गुरुवाणी का पाठ किया जाता है। जगह–जगह धार्मिक आयोजन होते हैं। प्रभात फेरी निकाली जाती है। इस दिन गरीबों दान देने का भी बहुत महत्व है।

संत, कवि, महान समाज सुधारक, दार्शनिक, योगी, गृहस्थ और देशभक्त गुरु नानकदेव समन्वयवादी संत गुरु नानकदेवजी का जन्म ऐसे समय में हुआ जब देश में अंधविश्वास आडंबर का बोलबाला था। धार्मिक कट्टरता के चलते समाज विघटित हो रहा था। अंध विश्वास, पाखण्ड, धार्मिक कट्टरता के दौर में गुरु नानक ने मानवता को धर्म के असली स्वरूप से अवगत करवाया। उन्होंने लोगों को सत्य और प्रेम का पाठ पढ़ाया, अंधविश्वासों, पाखन्डों का विरोध किया। उन्होंने समाज में समरसता लाने और अज्ञान के अंधकार को दूर करने का प्रयास किया। सभी धर्मों एवं बहुत से संतों की देशनाओं को गुरु ग्रंथ साहब में सम्मिलित कर समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया।

गुरु नानक देव जी के पिता का नाम बाबा कालूचंद्र और माता का नाम तृप्ता जी था। वे बचपन से ही सांसारिक विषयों के प्रति उदासीन थे, आपका झुकाव अध्यात्म की ओर होने लगा था। स्कूल 7–8 साल की उम्र में ही छूट गया क्योंकि भगवत्प्राप्ति के संबंध में इनके प्रश्नों के आगे अध्यापक हार मान गए और इन्हें ससम्मान घर छोड़ गए। पंडित और मौलवी सभी उनकी विद्वता से प्रभावित रहते थे। स्कूल छूटने के बाद उन्होंने अपना सारा समय सत्संग और आध्यात्मिक चिंतन में लगा दिया। गांव के लोग इन्हें दिव्य व्यक्तित्व मानने लगे थे।

एक बार उनके बहनोई जयराम ने गुरु नानक को अपने पास सुल्तानपुर बुला लिया। जयराम के प्रयास से वे सुल्तानपुर के गवर्नर दौलत खां के यहां मादी रख लिये गये। उन्होंने अपना कार्य ईमानदारी से किया। वहां की जनता तथा दौलत खां नानक के कार्य से बहुत सन्तुष्ट थे।

सोलह वर्ष की आयु में इनका विवाह गुरदासपुर जिले के लाखौकी के रहने वाले मूला की कन्या सुलक्खनी से हुआ। इनके दो पुत्र हुए श्रीचंद और लखमीदास। दोनों लड़कों के जन्म के बाद 1507 में नानक अपने परिवार का भार अपने ससुर पर छोड़ अपने चार साथियों मरदाना, लहना, बाला और रामदास को लेकर तीर्थयात्रा के लिये निकल पड़े।

पिता ने गुरु नानक को कृषि, व्यापार आदि में लगाने का प्रयास किया किन्तु वे सफल नहीं हो सके। कई बार, गुरु नानक देव जी के पिता उन्हें बाजार में सब्जियां बेचने के लिए भेजते थे। सब्जियां बेचते समय जब गिनती करते तो 13 नंबर पर आकर रुक जाते और अध्यात्मिक विचारों में लीन हो जाते। एक बार घोड़े के व्यापार के लिए दिये हुए रुपये उन्होंने साधुओं की सेवा में खर्च कर दिये। नानक व्यापार से होने वाले फायदे से भूखों को भोजन खिला देते थे। लंगर की परम्परा इसी तरह शुरू हुई।

एक बार उनके बहनोई जयराम ने गुरु नानक को अपने पास सुल्तानपुर बुला लिया। जयराम के प्रयास से वे सुल्तानपुर के गवर्नर दौलत खां के यहां मादी रख लिये गये। उन्होंने अपना कार्य ईमानदारी से किया। वहां की जनता तथा दौलत खां नानक के कार्य से बहुत सन्तुष्ट थे। वे अपनी आय का अधिकांश भाग ग़रीबों और साधुओं को दे देते थे। मरदाना तलवण्डी से आकर यहीं गुरु नानक का सेवक बना और अन्त तक उनके साथ रहा। गुरु नानक देव अपने

गुरु नानक देव जी ने अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने, धार्मिक बुराइयों को दूर करने और धर्म प्रचारकों को उनकी कमियां बताने के लिए तीर्थस्थलों की यात्राएं करने का निर्णय किया। परिवार की जिम्मेदारी अपने ससुर पर छोड़ 1507 ईस्वी में तीर्थयात्रा पर निकल गए। चार शिष्य रामदास, मरदाना, बाला और लहरा यात्रा में आपके साथ थे।

पद गाते थे और मरदाना रवाब बजाता था।

उदासियां

गुरु नानक देव जी ने अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने, धार्मिक बुराइयों को दूर करने और धर्म प्रचारकों को उनकी कमियां बताने के लिए तीर्थस्थलों की यात्राएं करने का निर्णय किया। परिवार की जिम्मेदारी अपने ससुर पर छोड़ 1507 ईस्वी में तीर्थयात्रा पर निकल गए। चार शिष्य रामदास, मरदाना, बाला और लहरा यात्रा में आपके साथ थे। गुरु नानक जी ने अपनी पहली तीर्थ यात्रा (उदासी) 1507 ईस्वी में शुरु की। लगभग आठ साल चली इस यात्रा में उन्होंने प्रयाग, नर्मदा तट, हरिद्वार, काशी, गया, पटना, असम, जगन्नाथ पुरी, अयोध्या, कुरुक्षेत्र, रामेश्वर, पानीपत, बीकानेर, द्वारिका, सोमनाथ, पुष्कर तीर्थ, दिल्ली, लाहौर मुल्तान आदि स्थानों की यात्रा की। यात्रा के दौरान उन्होंने कई लोगों का हृदय परिवर्तन किया और उन्हें सही मार्ग पर चलने की सीख दी।

गुरु नानक जी ने दूसरी यात्रा 1517 ईस्वी में शुरू की। इस यात्रा में उन्होंने सियालकोट, ऐमनाबाद, सुमेर पर्वत आदि स्थानों का दौरा किया और लोगों को सत्य के मार्ग पर चलने की सीख दी। यात्रा के अंत में 1518 ईस्वी में वे करतारपुर पहुंचे। उन्होंने 1518 से 1521 तक अपनी

उन्होंने करतारपुर नामक एक नगर बसाया, जो कि अब पाकिस्तान में है और एक बड़ी धर्मशाला उसमें बनवाई। इसी स्थान पर 22 सितंबर 1539 ईस्वी को इनका परलोकवास हुआ। मृत्यु से पहले उन्होंने अपने शिष्य भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जो बाद में गुरु अंगद देव के नाम से जाने गए।

तीसरी यात्रा में काबुल, साधुबेला (सिन्धु), बगदाद, बल्ख बुखारा, मक्का मदीना, रियासत बहावलपुर, कन्धार आदि स्थानों का दौरा किया। 1521 ईस्वी में जब ऐमनाबाद पर मुगल वंश के संस्थापक बाबर ने आक्रमण करना शुरु कर दिया तो, उन्होंने अपनी यात्राओं को विराम दे दिया और करतारपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में बस गए। अंतिम समय तक वे करतारपुर में ही रहे।

विचार और सिद्धांत

गुरु नानक देव जी सर्वेश्वरवादी थे। उन्होंने सनातन मत की मूर्तिपूजा की शैली के विपरीत एक परमात्मा की उपासना का एक अलग मार्ग मानवता को दिया। हिंदू धर्म में फैली कुरीतियों का विरोध किया। गुरु नानक देव जी कहते थे अपने अंदर झांको। सांसारिक मामलों में इतने भी मत उलझ जाओ कि परमेश्वर को भूल जाओ। सिक्ख धर्म की सबसे महत्वपूर्ण प्रार्थना जपजी साहिब गुरु नानक देव जी द्वारा लिखी गई है।

कवि हृदय

नानक अच्छे सूफी कवि भी थे। उनके भावुक और कोमल हृदय ने प्रकृति से एकात्म होकर जो अभिव्यक्ति की है, वह निराली है। उनकी भाषा 'बहता नीर' थी जिसमें फारसी, मुल्तानी, पंजाबी, सिंधी, खड़ी बोली, अरबी के शब्द समा गए थे।

गुरु नानक देव जीवनभर धार्मिक यात्राएं कर लोगों को मानवता का उपदेश देते रहे। जीवन के अंतिम दिनों में इनकी ख्याति बहुत बढ़ गई वे अपने परिवार के साथ रह कर मानवता कि सेवा में समय व्यतीत करने लगे। उन्होंने करतारपुर नामक एक नगर बसाया, जो कि अब पाकिस्तान में है और एक बड़ी धर्मशाला उसमें बनवाई। इसी स्थान पर 22 सितंबर 1539 ईस्वी को इनका परलोकवास हुआ। मृत्यु से पहले उन्होंने अपने शिष्य भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जो बाद में गुरु अंगद देव के नाम से जाने गए।

उनका कहना था

ईश्वर एक है।

सदैव उसकी उपासना करनी चाहिए।

ईश्वर सब जगह और सभी में मौजूद है।

ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं होता।

मेहनत और ईमानदारी से कमाई करके जरूरतमंद की मदद करो ।

सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं।

भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए जरूरी है, पर लोभ–लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है।

मोहन थाल

नीता हर्ष

दीपावली पर घर पर बनाएं श्री कृष्ण को प्रिय व्यंजन

सामग्री

100 ग्राम बेसन मोटा पिसा हुआ, 150 ग्राम घी, 100 ग्राम मावा, 150 ग्राम चीनी, इलायची पाउडर, जायफल – जावित्री पाउडर, बादाम और पिस्ता की कतरन, थोड़ी सी केशर और गुलाब जल

बेसन में देसी घी का मोयन डालकर बेसन को टाइट गूंध लें। अब इसका मोटा परांठा बना लें। परांठे को सेकते समय आंच एकदम धीमी रखना जरूरी है ताकि परांठा अंदर तक पक जाय। परांठे को हाथों से मसल कर बारीक चूरमा बना लें। चूरमे को मोटे छेद वाली छलनी से छान लें। कड़ाही में घी गरम कर उसमें छने हुए चूरमे को सेक लें। अब इसमें मावा डालकर सेक लें। जब तक मावा पूरी तरह से मिल न जाय तब तक सेकते रहें, मिश्रण को निरंतर पलटे से पलटते रहें, नहीं तो मिश्रण जल जाएगा। चीनी की गाढ़ी दो तार की चाशनी बनाएं। चाशनी में इलायची, जायफल, जावित्री का पाउडर, गुलाबजल में भीगी केशर मिला दें। सिके हुए मिश्रण को थोड़ा–थोड़ा कर चाशनी में डालें, अच्छी तरह से मिलाएं। अब इसे घी से चिकनी की हुई थाली में जमा दें। बादाम और पिस्ता की कतरन बुरक दें। दो घंटे तक थाली को ऐसे ही रहने दें। अच्छी तरह जम जाने के बाद मनचाहे आकार में काट लें।

नोट – बाजार में उपलब्ध मावे की गुणवत्ता को लेकर शंका हो तो इस मिठाई को आप मावे के बिना भी बना सकते हैं। बिना मावे का मोहन थाल ज्यादा दिनों तक खराब नहीं होता।

नीता हर्ष

दाल का हलुआ

दीपावली पर घर पर बनाएं दाल का हलुआ

सामग्री

मूंग दाल	:	आधा किलो
घी	:	आधा किलो
मावा	:	आधा किलो
चीनी	:	आधा किलो
बादाम पिस्ता	:	कतरन
केशर, गुलाबजल	:	अंदाज से

दो से तीन घंटे भीगी हुई मूंग की दाल को ग्राइंडर में पीस लें। बड़ी कड़ाही में घी डाल कर पिसी हुई दाल को सेक लें। लगभग आधे घंटे तक पलटे से मिश्रण को पलटते रहें ताकि कड़ाही के चिपके नहीं। अब इसमें मावा डालें। मावे को दाल के साथ पूरी तरह मिला दें। जब यह मिश्रण कड़ाही के चिपकना बंद हो जाय और मिश्रण के किनारों पर घी नजर आने लग जाय तब यह मानें कि दाल सिक चुकी है। अब इसमें चीनी की चाशनी बना कर मिला दें। गुलाब जल में घुटी हुई केसर चाशनी में डालना न भूलें। हलुआ तैयार। अब इस पर बादाम पिस्ता की कतरन बुरक दें।

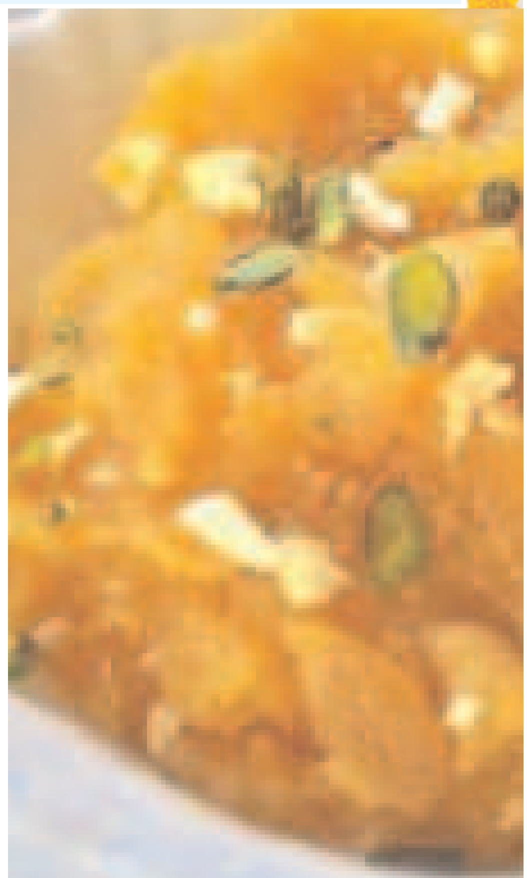

नोट – घर पर तैयार व्यंजनों में परिवार का स्नेह स्वाद बढ़ा देता है।

नारियल की बर्फी

नीता हर्ष

दीपावली पर घर पर बनाएं नारियल की बर्फी

सामग्री

दूध	4 लीटर
नारियल पाउडर	आधा किलो
चीनी	आधा किलो

- दूध को खूब ओटा कर गाढ़ा कर लें।
- अब इसमें नारियल का बुरादा और चीनी मिला लें।
- मिश्रण को घी से चिकनी की हुई थालियों में जमा लें।
- अच्छी तरह जम जाने के बाद बर्फी के आकार में काट लें।

नोट – दूध की जगह आधा किलो मावे का इस्तेमाल किया जा सकता है।

नीता हर्ष

गंडेरी

दीपावली पर घर पर बनाएं गंडेरी

सामग्री

आगरे का पेठा	आवश्यकतानुसार
केशर	आवश्यकतानुसार
गुलाब जल	आवश्यकतानुसार

- बाजार से बना बनाया आगरे का पेठा लाएं।

- पेठे को अपनी पसंद के आकार में काट कर उबलते हुए पानी में थोड़ी देर के लिए रखें।

- पानी निकाल दें और केशर मिश्रित गुलाब जल में भिगोकर फ्रिज में रख दें।

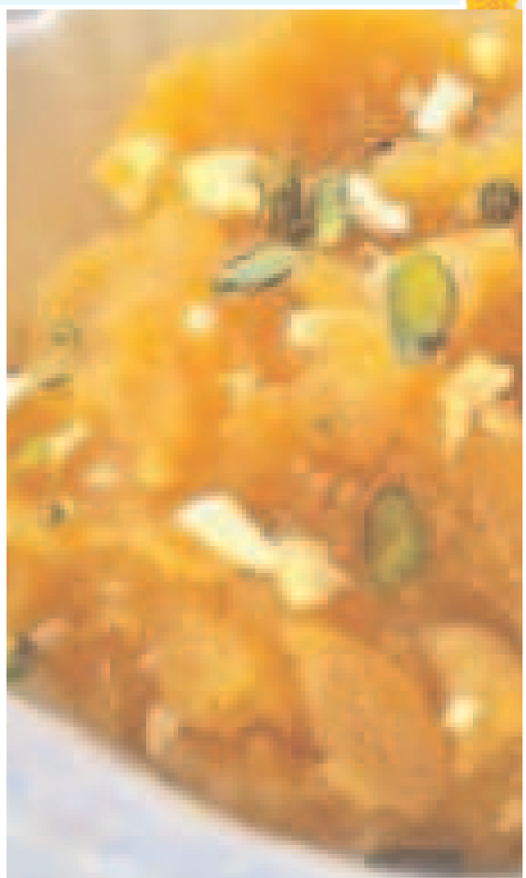

नोट - घर पर तैयार व्यंजनों में परिवार का स्नेह स्वाद बढ़ा देता है।

गौरव
(लेखक)
राजस्थान

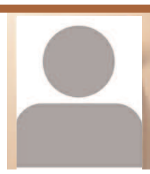

नया साल

नया बही खाता

बही कम्प्यूटर के आगमन से पहले तक व्यवसाय का आधार रही है। बही खातों ने ही राजस्थान के व्यापार – व्यवसाय को विदेशों तक पहुंचाया। एक समय था जब व्यापारी अपना सारा लेन देन, सारी व्यावसायिक बातें, बहियों में ही दर्ज करते थे। कम्प्यूटर के आगमन के बाद सारा लेन देन कम्प्यूटर में दर्ज किया जाने लगा। इससे बहियों की जरूरत पहले की अपेक्षा कम हो गई।

लेकिन जरूरत कम होने के बाद भी व्यापारियों में बही के प्रति सम्मान का वही भाव रहा जो पहले कभी था। यही कारण है कि आज भी दीपावली के दिन मां लक्ष्मी की पूजा करने के साथ ही बही, कलम और दवात की भी पूजा की जाती है। हर व्यापारी चाहे छोटा दुकानदार हो या फिर कोई बड़ा उद्योगपति बही की पूजा अवश्य करता है। तराजू, गल्ला, नाप– तौल के औजारों तथा व्यवसाय में काम आने वाले उपकरणों की भी पूजा की जाती है।

परम्परा के अनुसार दीपावली व्यापारियों के लिए दीपावली से नये साल की शुरुआत होती है। इस दिन खाते बदले जाते हैं, नए खातों की शुरुआत की जाती है। बही पर केशर युक्त चंदन या कुमकुम से स्वातिक बनाते है। बही पूजन को कहीं कहीं चौपड़ी पूजन भी कहते हैं।

नया अन्न चढ़ाते हैं

लक्ष्मी केवल धन की देवी नही कृषि उर्वरता और अन्न की भी देवी है। भारतीय समाज कृषि प्रधान रहा है। इसी लिए हमारे यहां अधिकांश त्योहार फसल के पकने पर और फसल की बुवाई के समय मनाए जाते हैं। दीपावली का पर्व ऐसे वक्त आता है जब खरीफ की फसल फसल अभी खलिहानों और गोदामों में होती है और रबी की बुवाई की तैयारी चल रही होती है। इसलिए अच्छी फसल की कामना करते हुए ताजे गन्ने और अनाज की बालियां मां लक्ष्मी को समर्पित की जाती है। जहां गन्ने की खेती होती है वहां के लोग गन्ना और जहां बाजरा होता है वहां के लोग बाजरे की बालियां समर्पित करते हैं।

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दयानिधे॥

जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसदिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुम को निश दिन सेवत, हर विष्णु विधाता....
जय लक्ष्मी माता...।

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता
सूर्य चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता
जय लक्ष्मी माता...।।

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धि धन पाता
जय लक्ष्मी माता...।।

तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभ दाता
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भव निधि की त्राता
जय लक्ष्मी माता...।।

जिस घर तुम रहती सब सद्गुण आता
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता
जय लक्ष्मी माता...।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता
जय लक्ष्मी माता...।।

शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता
जय लक्ष्मी माता...।।

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता
जय लक्ष्मी माता...।।

आग्रह : आरती से पूर्व श्लोक का वाचन भी करना चाहिए।

Simplex Infrastructures Limited

Regd. Office : 'Simplex House' 27, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 017, India
Phone : (033) 2301-1600 • E-mail : simplexkolkata@simplexinfra.com
Fax : (033) 2283-5964/65/66 • Website : www.simplexinfrastructures.com

Admn. Office : 12/1, Nellie Sengupta Sarani, Kolkata - 700 087, India
Phone : 2252-0923/0924/3794/7596/8371/8373/8374/9372

SERVING THE NATION SINCE 1924 YEARS

Branches

New Delhi :
HEMKUNTH (4th Floor)
89, Nehru Place, New Delhi - 110 019
Ph : (011) 4944-4200/4300/4932-1400
Fax : (011) 2646-2788/5869, 2622-7982
E-mail : simplexdelhi@simplexinfra.com

Mumbai :
502-A, Poonam Chambers,
Shivsagar Estate, Dr. Annie Besant Road,
'Worli' Mumbai - 400 018
Ph : (022) 62466666/24912755/24913481
Fax : (022) 2491-2735
E-mail : simplexmumbai@simplexinfra.com

Chennai :
New No. 48 (Old No. 21), Casa Major Road
'Egmore', Chennai - 600 008
Ph : (044) 2819-5050 (5 Lines)
Fax : (044) 2819-5056/57
E-mail : simplexchennai@simplexinfra.com